अध्याय II

वित्तीय संस्थाएं : गतिविधियां एवं स्थिरता

2013-14 के दौरान भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की वृद्धि में और अधिक गिरावट आई। बैंकों के बकाया ऋणों के लिए प्रावधानीकरण के उच्च स्तर तथा ऋण की मंद वृद्धि होने के कारण लाभप्रदता में कमी आई। शहरी एवं ग्रामीण सहकारी बैंकों के वित्तीय हालात तथा सुदृढ़ता से प्रमुख सूचकों की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों का पता चलता है। शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) ने बेहतर प्रदर्शन किया किंतु प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पीएसीएस) तथा दीर्घावधि ग्रामीण ऋण समितियों का कार्य निष्पादन उनकी हानियों के साथ ही आस्ति गुणवत्ता में गिरावट होने के कारण चिंता का विषय बना हुआ है। जमा स्वीकार नहीं करने वाली-गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां जो प्रणालीगत दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, की आस्तियों के आकार में वृद्धि देखी गई किंतु, समीक्षा अवधि में उनकी आस्ति गुणवत्ता में और अधिक गिरावट आ गई है।

बैंकिंग स्थिरता सूचक से पता चलता है कि 2014-15 की पहली छमाही के दौरान बैंकिंग क्षेत्र पर समग्र जोखिम अपरिवर्तित रहा। व्यक्तिशः आयामों के अंतर्गत, प्रणाली में चलनिधि की स्थिति में सुधार हुआ है किंतु सुदृढ़ता में कमी होने के साथ ही आस्ति गुणवत्ता में और अधिक गिरावट होने के कारण चिंताएं बनी हुई हैं। सूचक के लाभप्रदता आयाम में सुधार का पता चलता है किंतु यह अभी भी धीमा बना हुआ है। दबाव परीक्षण से पता चलता है कि समष्टि आर्थिक परिस्थितियों में संभावित सकारात्मक गतिविधियों के तहत बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में आने वाले समय में सुधार हो सकता है और बैंक अपने वर्तमान प्रावधानीकरण के स्तर के साथ संभावित हानियों को पूरा करने की स्थिति में हो सकते हैं। हालांकि, यदि समष्टि आर्थिक परिस्थितियां बहुत अधिक खराब हो जाएं तो अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) की आस्ति गुणवत्ता में वर्तमान स्तर से और गिरावट आ सकती है और बैंक, प्रतिकूल समष्टि आर्थिक जोखिम परिदृश्यों के अंतर्गत पर्याप्त प्रावधानीकरण के रूप में प्रत्याशित हानियों को पूरा कर पाने में पीछे रह सकते हैं।

परस्पर संबद्धता के विश्लेषण से पता चलता है कि कुल बैंकिंग क्षेत्र की आस्तियों की तुलना में अंतर-बैंक बाजार का आकार धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। किंतु, पाँच अत्यधिक संबद्ध बैंकों के संक्रामक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि यदि कोई एक बैंक संक्रामकता का शिकार होता है तो संयुक्त ऋण-शोधन-चलनिधि स्थिति के अंतर्गत बैंकिंग प्रणाली अपनी टियर-I पूंजी को काफी हद तक गंवा सकती है।

2.1 ऋण के लिए सुस्त मांग तथा आस्ति गुणवत्ता की चिंता के चलते भारतीय बैंकिंग क्षेत्र ने 2013-14 में अपेक्षाकृत कम वृद्धि तथा लाभप्रदता में झुकाव का अनुभव किया। अनुसूचित वाणिज्य बैंकों (एससीबी) ने तुलन-पत्र वृद्धि में कमी तथा निवल लाभों में गिरावट दर्शायी जबकि अन्य बैंकिंग संस्थानों के बीच प्रवृत्तियां भिन्न रहीं। प्राथमिक कृषि ऋण सोसायटियों(पीएसी) को छोड़कर शहरी सहकारी बैंकों तथा अल्पावधि ग्रामीण ऋण सहकारी संस्थाओं ने वृद्धि तथा स्वास्थ्य में भी सुधार दर्शाया। तथापि, दीर्घावधि क्रेडिट सहकारी संस्थाएं बैंकिंग क्षेत्र के भीतर एक कमज़ोर बिंदु बनी रहीं।

2.2 इस रिपोर्ट में प्रयुक्त डाटा 31 मार्च 2014 को समाप्त वर्ष के लिए बैंकों के लेखापरीक्षित खातों पर आधारित हैं तथा विश्लेषण के लिए 30 सितंबर 2014 तक की पर्यवेक्षी विवरणियों का प्रयोग किया गया है। वार्षिक खातों में बैंकों के विदेशी परिचालन शामिल हैं जबकि पर्यवेक्षी विवरणियों ने केवल उनके देशी परिचालन कवर किए हैं। तुलन-पत्रों पर विस्तृत डाटा तथा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, स्थानीय क्षेत्र बैंकों, शहरी सहकारी बैंकों तथा ग्रामीण ऋण सहकारी समितियों के आय और व्यय (www.rbi.org.in) पर 'भारत में बैंकों से संबंधित सांख्यिकी सारणियां - 2013-14 में उपलब्ध हैं।

अनुसूचित वाणिज्य बैंक

2.3 इस खंड में अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के (i) 2013-14 के दौरान उनके देशी तथा विदेशी परिचालनों को शामिल करते हुए समेकित परिचालन(उनके लेखा-परीक्षित खातों के माध्यम से रिपोर्ट किए गए) तथा (ii) 2014-15 की प्रथम छमाही के दौरान घरेलू परिचालन (पर्यवेक्षी विवरणियों पर आधारित) स्वास्थ्य तथा कार्य-निष्पादन पर चर्चा की गई है।

कार्य-निष्पादन

समेकित परिचालन

2.4 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के समेकित तुलन-पत्र ने 2013-14 में कुल आस्तियों, और ऋण में वृद्धि में लगातार चौथे

वर्ष भी गिरावट दर्ज की (चार्ट 2.1)। इस गिरावट का श्रेय विभिन्न कारकों को जाता है जो धीमी आर्थिक वृद्धि से लेकर, डीलिवरेजिंग, आस्ति गुणवत्ता पर सतत दबाव जिससे बैंकों के बीच जोखिम विमुखता बढ़ती है तथा कार्पोरेट द्वारा गैर-बैंकिंग वित्त जिसमें वाणिज्यिक पत्र और बाह्य (वाणिज्यिक)उधार शामिल है, पर बढ़ती निर्भरता है।

2.5 ऋण तथा जमा दोनों की वृद्धि कमोबेश समान रही है, इसलिए समग्र स्तर पर बकाया ऋण-जमा (सी-डी) अनुपात लगभग 79 प्रतिशत पर अपरिवर्तित था (चार्ट 2.2)।

चार्ट 2.1 : आस्ति, ऋण और जमाराशि वृद्धि

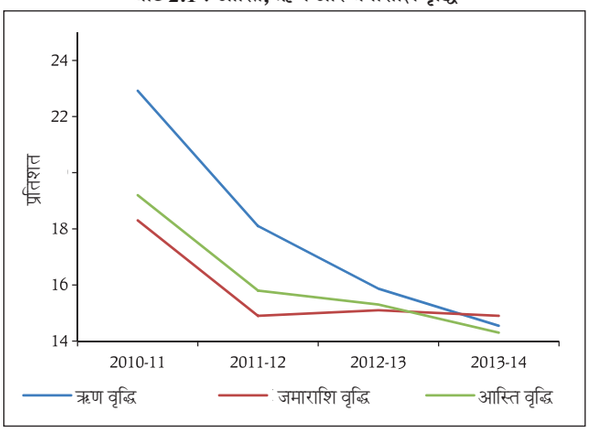

स्रोत : बैंकों के वार्षिक खाते

घरेलू परिचालन

ऋण और जमा वृद्धि

2.6 वर्ष-दर-वर्ष आधार पर ऋण वृद्धि में सतत गिरावट रही तथा सितंबर 2014 के अंत तक 10.0 प्रतिशत की न्यूनतम वृद्धि दर्ज की गई और साथ ही सरकारी क्षेत्र के बैंकों ने दूसरों के मुकाबले 7.9 प्रतिशत के साथ निम्नतर निष्पादन दर्ज किया। जमा वृद्धि में भी सितंबर 2014 तक 12.9 प्रतिशत की गिरावट आई जबकि मार्च 2014 तक यह 13.7 प्रतिशत थी (चार्ट 2.3)।

चार्ट 2.2 : बकाया सी-डी अनुपात में प्रवृत्तियां : बैंक-समूह वार

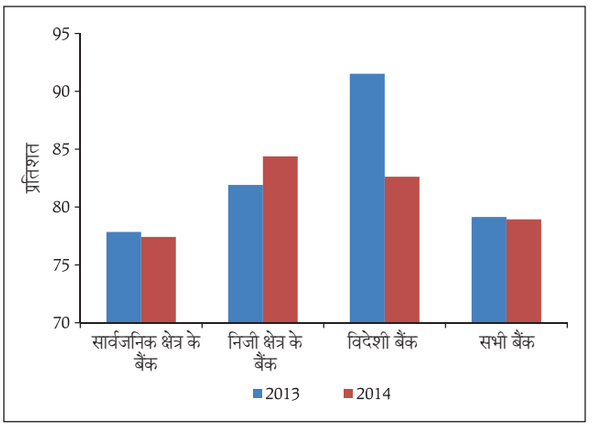

स्रोत : बैंकों के वार्षिक खाते

चार्ट 2.3 : ऋण और जमाराशियां वृद्धि - वर्षानुवर्ष आधार पर

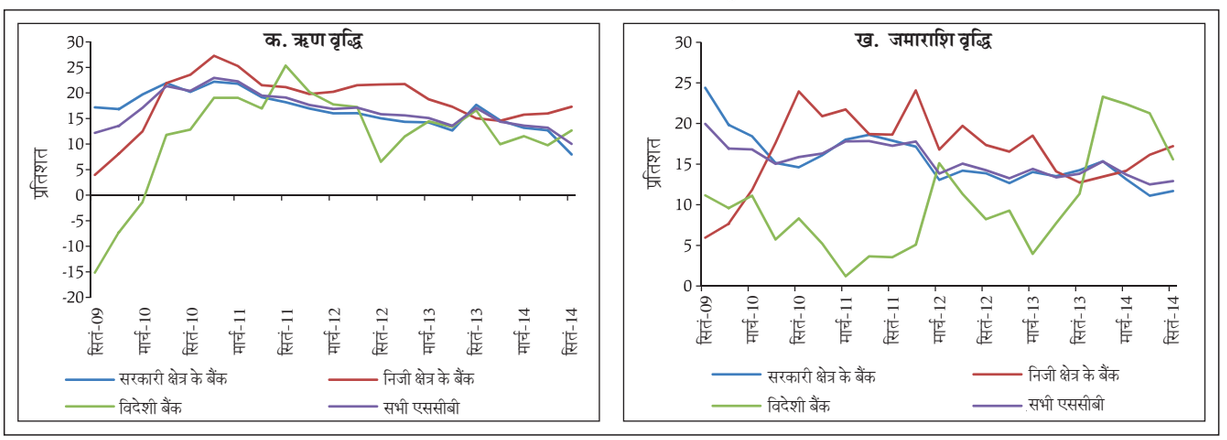

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां

सुदृढ़ता

पूंजी पर्याप्तता

2.7 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल पूंजी और जोखिम भारित आस्तियों (आरडब्ल्यूए) में मार्च और सितंबर 2014 के बीच क्रमशः 1.9 प्रतिशत, 4.1 प्रतिशत वृद्धि हुई जिसके फलस्वरूप जोखिम भारित आस्तियों के अनुपात की तुलना में पूंजी (सीआरएआर) 13.0 प्रतिशत से कम होकर 12.8 प्रतिशत हो गई (चार्ट 2.4)।

लीवरेज

2.8 सितंबर 2014 में टियर I लिवरेज अनुपात[1] 6.2 प्रतिशत था। सरकारी क्षेत्र के बैंकों के मामले में यह मार्च 2014 के 5.1 प्रतिशत से मामूली रूप से बढ़कर सितंबर 2014 में 5.2 प्रतिशत हो गया (चार्ट 2.5)।

आस्ति गुणवत्ता

2.9 कुल सकल अग्रिमों की तुलना में एससीबी के सकल अनर्जक अग्रिमों (जीएनपीए) के प्रतिशत में सितंबर 2014 में 4.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि यह मार्च 2014 में 4.1 प्रतिशत था। कुल निवल अग्रिमों की तुलना में निवल अनर्जक अग्रिमों (एनएनपीए) के प्रतिशत में भी सितंबर 2014 में 2.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि यह मार्च 2014 में 2.2 प्रतिशत था। दबावग्रस्त अग्रिम[2] कुल अग्रिमों के प्रतिशत की तुलना में मार्च और सितंबर 2014 के बीच 10.0 प्रतिशत से 10.7 प्रतिशत बढ़ गया। सरकारी क्षेत्र के बैंकों ने सितंबर 2014 में उनके कुल अग्रिमों में 12.9 प्रतिशत के उच्चतम स्तर के दबावग्रस्त अग्रिम दर्ज किया गया जिसके बाद निजी क्षेत्र के बैंक 4.4 प्रतिशत पर रहे (चार्ट 2.6)।

2.10 अधिक सूक्ष्म स्तर पर, 46 एससीबी (एससीबी के कुल ऋण पोर्टफोलियो का लगभग 88 प्रतिशत का हिसाब लेते हुए) के मामले में मार्च और सितंबर 2014 के बीच कुल दबावग्रस्त अग्रिमों

चार्ट 2.4 : पूंजी पर्याप्तता - सीआरएआर

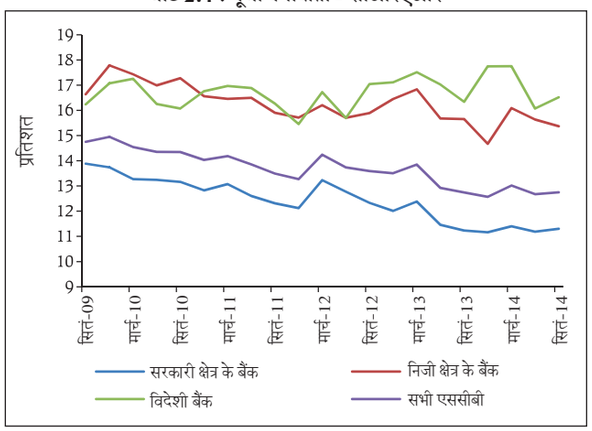

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां

चार्ट 2.5 : एससीबी का लिवरेज अनुपात

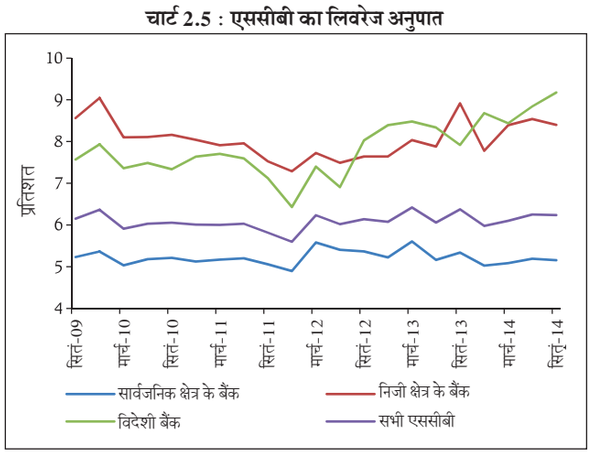

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां

चार्ट 2.6 : अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की आस्ति गुणवत्ता

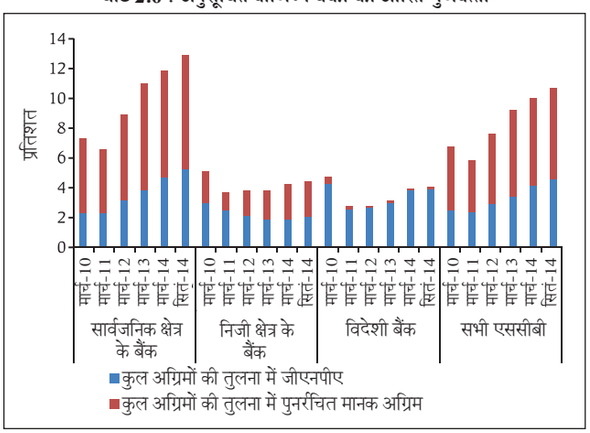

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां

[1] टियर 1 लिवरेज अनुपात को कुल आस्तियों की तुलना में टियर I पूंजी अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है।

[2] आस्ति गुणवत्ता का विश्लेषण करने हेतु दबावग्रस्त अग्रिमों को जीएनपीए तथा पुनर्रचित मानक अग्रिम के रूप में परिभाषित किया गया है।

के हिस्से में वृद्धि हुई (सारणी 2.1)। 20 बैंक ऐसे हैं जिनका एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों में शेयर एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों में उनके शेयर की तुलना में अधिक हैं। इन 20 बैंकों के पास समग्र रूप से एससीबी के कुल ऋण का 43 प्रतिशत है तथा बैंकिंग प्रणाली का कुल दबावग्रस्त अग्रिम में उनका लगभग 60 प्रतिशत का योगदान है।

2.11 पांच उप-खंड यथा 'मूलभूत सुविधाएं', 'लोहा और इस्पात', 'कपड़ा', 'खनन (कोयला सहित)' तथा 'विमानन' है जिनमें मुख्यतः उच्चतर स्तर की दबावग्रस्त आस्तियां थीं और पिछली एफएसआर में इन उप-खंडों को 'दबावग्रस्त' क्षेत्र के रूप में पहचाना गया था। जून 2014 के अंत की स्थिति के अनुसार इन पांच उप-खंडों के पास सभी एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों का 52 प्रतिशत था जबकि सरकारी क्षेत्र के बैंकों के मामले में यह 54 प्रतिशत था (सारणी 2.2.)।

2.12 सितंबर 2014 तक मूलभूत सुविधा क्षेत्र के एक्सपोज़र से संबंधित डाटा से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का एक्सपोज़र उनके कुल ऋण की तुलना में 15.6 प्रतिशत और बढ़ गया है। ऊर्जा खंड जिसमें मुख्य रूप से बिजली, तेल, गैस शामिल है का एक्सपोज़र, मूलभूत सुविधा क्षेत्रों के प्रति बैंक के समग्र एक्सपोज़र का प्रमुख भाग (लगभग 58 प्रतिशत) तथा उसके बाद परिवहन (लगभग 21 प्रतिशत) तथा दूरसंचार (लगभग 10 प्रतिशत) है। बैंक समूहों के बीच सितंबर 2014 के अंत की स्थिति के अनुसार मूलभूत सुविधा में

सारणी 2.1 : मार्च-सितंबर 2014 के दौरान दबावग्रस्त अग्रिम अनुपात में परिवर्तन

	बैंकों की संख्या	सभी एससीबी के कुल अग्रिमों में शेयर (प्रतिशत में)
दबावग्रस्त अग्रिम अनुपात में वृद्धि	46	88.2
दबावग्रस्त अग्रिम अनुपात में गिरावट	25	5.9
दबावग्रस्त अग्रिम अनुपात में कोई परिवर्तन नहीं	18	5.9
जोड़	**89**	**100.0**

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां

सारणी 2.2 : कुल ऋण पोर्टफोलियो में दबावग्रस्त अग्रिमों का हिस्सा

प्रतिशत

उप खंड		सभी एससीबी			पीएसबी		
		मार्च 13	मार्च 14	जून 14	मार्च 13	मार्च 14	जून 14
खनन	एससीबी के कुल अग्रिम में शेयर	0.7	0.6	0.6	0.8	0.7	0.7
	एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों में शेयर	0.6	0.9	0.9	0.6	0.8	0.8
लोहा और इस्पात	एससीबी के कुल अग्रिम में शेयर	4.9	4.8	4.8	5.7	5.5	5.6
	एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों में शेयर	8.2	10.8	10.2	8.7	11.2	10.6
टेक्सटाइल	एससीबी के कुल अग्रिम में शेयर	3.7	3.5	3.5	4.1	4.0	4.0
	एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों में शेयर	7.5	7.7	7.2	7.5	7.8	7.4
मूलभूत सुविधाएं	एससीबी के कुल अग्रिम में शेयर	14.6	14.4	14.8	16.8	16.5	17.1
	एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों में शेयर	28.8	29.4	30.7	29.5	30.2	31.9
विमानन	एससीबी के कुल अग्रिम में शेयर	0.5	0.5	0.5	0.6	0.6	0.7
	एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों में शेयर	3.9	3.3	3.1	4.3	3.6	3.4
जोड़	**एससीबी के कुल अग्रिम में शेयर**	**24.4**	**23.9**	**24.2**	**28.0**	**27.2**	**28.0**
	एससीबी के कुल दबावग्रस्त अग्रिमों में शेयर	**48.9**	**52.0**	**52.0**	**50.5**	**53.7**	**54.0**

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां

सरकारी क्षेत्र के बैंकों का एक्सपोज़र उनके सकल अग्रिमों का 17.5 प्रतिशत था जोकि निजी क्षेत्र के बैंकों (9.6 प्रतिशत पर) तथा विदेशी बैंकों (12.1 प्रतिशत पर) से उल्लेखनीय रूप से अधिक था।

लाभप्रदता

समेकित परिचालन

2.13 2013-14 के दौरान, अनुसूचित वाणिज्य बैंकों (एससीबी) के निवल लाभ में वृद्धि जो 2011-12 से गिरती प्रवृत्ति की रही है वह 2013-14 में नकारात्मक हो गई। समस्त अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का निवल लाभ लगभग 809 बिलियन रुपए था जिससे ज्ञात होता है कि पिछले वर्ष की तुलना में 11.3 प्रतिशत की कमी हुई है। निवल लाभ में गिरावट मुख्यत: बैंक के विलंबित ऋणों पर अधिक प्रावधानीकरण के कारण हुई जिससे वर्ष के दौरान लगभग 12 प्रतिशत ब्याज व्यय में वृद्धि के साथ-साथ लगभग 34 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। परिणामस्वरूप उनका आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) तथा इक्विटी पर प्रतिलाभ (आरओई) (सारणी 2.3) प्रभावित हुआ। उनके स्प्रेड तथा निवल ब्याज मार्जिन (एनआईएम) में भी गिरावट दिखाई दी (चार्ट 2.7)।

घरेलू परिचालन

2.14 वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान कर पश्चात लाभ (पीएटी) के संकुचन के बाद एससीबी ने प्रावधानीकरण तथा बट्टे खाते डालने में उल्लेखनीय निम्नतर वृद्धि के कारण सितंबर 2014 में पीएटी में 10.0 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई। सितंबर 2014 के अंत की स्थिति के अनुसार सभी एससीबी की आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) 0.8 प्रतिशत पर स्थिर रहा जबकि एससीबी की इक्विटी पर प्रतिलाभ (आरओई) में सितंबर 2014 के अंत की स्थिति के अनुसार 9.9 प्रतिशत का सुधार रहा जबकि यह मार्च 2014 की स्थिति के अनुसार 9.5 प्रतिशत था (सारणी 2.4)।

सारणी 2.3 : अनुसूचित वाणिज्य बैंकों (एससीबी) की आस्तियों तथा इक्विटी पर प्रतिलाभ - बैंक समूह-वार

(प्रतिशत)

क्रम सं.	बैंक समूह/वर्ष	आस्तियों पर प्रतिलाभ		इक्विटी पर प्रतिलाभ	
	1	2	3	4	5
		2012-13	2013-14	2012-13	2013-14
1	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	0.80	0.50	13.24	8.47
2	निजी क्षेत्र के बैंक	1.63	1.65	16.46	16.22
3	विदेशी बैंक	1.92	1.57	11.53	9.02
	सभी एससीबी	1.04	0.81	13.84	10.68

टिप्पणियां : आस्तियों पर प्रतिलाभ = निवल लाभ / औसत कुल आस्तियां
इक्विटी पर प्रतिलाभ = निवल लाभ / औसत कुल इक्विटी
स्रोत : संबंधित बैंकों के वार्षिक लेखा

चार्ट 2.7 : स्प्रेड / एनआईएम में प्रवृत्तियां

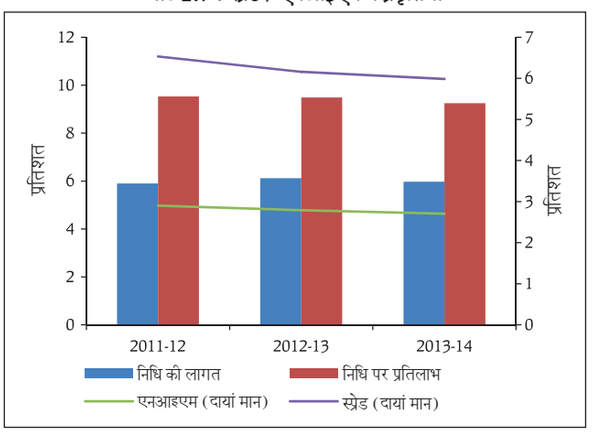

टिप्पणियां : निधि की लागत = (आईपीडी + आईपीबी) / (जमाराशि + उधार)
निधि पर प्रतिलाभ = (आईईए + आईईआई) / (अग्रिम + निवेश)
निवल ब्याज मार्जिन = निवल ब्याज आय/ कुल आस्तियां
स्प्रेड = प्रतिलाभ और निधि की लागत के बीच का अंतर जहां:
आईपीडी = जमाराशियों पर प्रदत्त ब्याज
आईपीबी = आरबीआई एवं अन्य एजेंसियों से लिए गए उधार पर प्रदत्त ब्याज
आईईए = अग्रिमों और बिलों पर अर्जित ब्याज
आईईआई = निवेश पर अर्जित ब्याज
स्रोत : बैंकों का वार्षिक लेखा

सारणी 2.4 : एससीबी की लाभप्रदता

(प्रतिशत)

	आस्तियों पर प्रतिलाभ	इक्विटी पर प्रतिलाभ	पीएटी वृद्धि	प्रावधानीकरण एवं कर वृद्धि पूर्व अर्जन	निवल ब्याज आय -वृद्धि	अन्य परिचालगत आय - वृद्धि
सितं-11	1.0	12.4	6.3	11.2	16.8	4.1
मार्च-12	1.1	13.4	14.6	15.3	15.8	7.4
सितं-12	1.1	13.2	24.5	13.2	12.9	12.4
मार्च-13	1.0	12.9	12.9	9.9	10.8	14.4
सितं-13	0.8	10.2	-9.7	12.8	11.6	30.5
मार्च-14	0.8	9.5	-14.1	9.5	11.7	16.6
सितं-14	0.8	9.9	10.0	7.0	9.7	4.3

टिप्पणी : आस्तियों पर प्रतिलाभ तथा इक्विटी पर प्रतिलाभ वार्षिकीकृत आंकड़े हैं जबकि वृद्धियों की गणना वर्ष-दर-वर्ष आधार पर की गई हैं।
स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

जोखिम

2.15 बैंकिंग स्थिरता संकेतक (बीएसआई)[3] के अनुसार बैंकिंग क्षेत्र के जोखिम में, पिछले एफएसआर[4] के प्रकाशन के बाद अब तक ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ है। बीएसआई ने पिछले कतिपय वर्षों में बैंकिंग क्षेत्र में संवेदनशीलता में लगातार वृद्धि दर्शायी। जोखिमों में वृद्धि करने वाले घटकों को उनकी अंशधारिता के क्रम में इस प्रकार रखा जा सकता हैं : चलनिधि, लाभ प्रदता, सुदृढ़ता और आस्ति गुणवत्ता । हालांकि, मार्च और सितंबर 2014 के दौरान प्रणाली में चलनिधि स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन आस्ति गुणवत्ता तथा सुदृढ़ता[5] में और कमी हुई है जोकि चिंता का विषय बना हुआ है। लाभप्रदता में सुधार रहा लेकिन सुस्त रहा (चार्ट 2.8 और 2.9)।

चार्ट 2.8 : बैंकिंग स्थिरता संकेतक

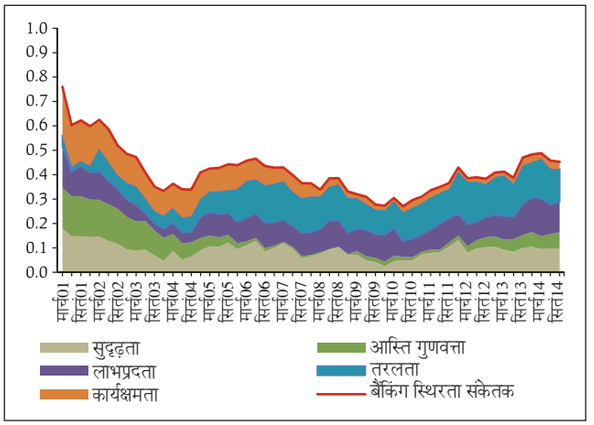

टिप्पणी : सूचक मूल्य में वृद्धि से कम स्थिरता का पता चलता है। प्रत्येक आयाम की चौड़ाई जोखिम के प्रति अपने योगदान को दर्शाती है।
स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां[6] तथा स्टाफ का आकलन

दबाव परीक्षण

समष्टि दबाव परीक्षण - ऋण जोखिम

2.16 समष्टि आर्थिक आघातों के विरुद्ध भारतीय बैंकिंग प्रणाली के लचीलेपन की जांच ऋण जोखिम हेतु क्रमबद्ध समष्टि दबाव परीक्षणों के माध्यम से प्रणाली, बैंक समूह तथा सेक्टरवार स्तर पर की गई। इन परीक्षणों में कल्पित जोखिम परिदृश्य सम्मिलित है जिससे एक बेसलाइन तथा मध्यम और भारी जोखिम को दर्शाते हुए दो प्रतिकूल समष्टि आर्थिक परिदृश्य को समाविष्ट किया गया है (सारणी 2.5)। प्रतिकूल परिदृश्य, मध्यम जोखिम के

चार्ट 2.9 : बैंकिंग स्थिरता मानचित्र

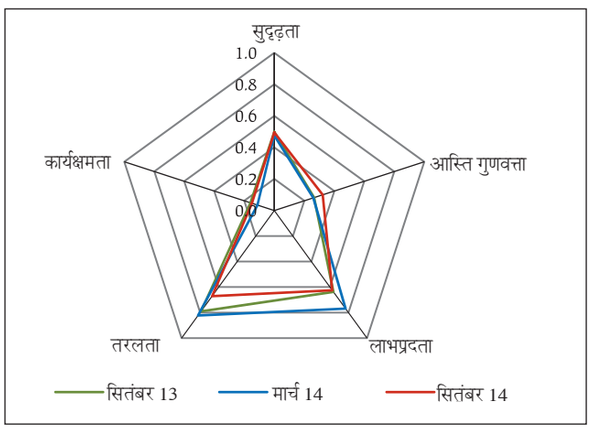

टिप्पणी : केंद्र बिंदु से दूरी जोखिम में बढ़ोत्तरी दर्शाता है।
स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन

सारणी 2.5 : समष्टि आर्थिक परिदृश्य धारणाएं[7]

(प्रतिशत)

वित्त वर्ष		आधार रेखा	मध्यम दबाव	अति दबाव
2014-15*	वास्तविक जीडीपी वृद्धि	5.5	4.0	2.6
	सकल राजकोषीय घाटा	4.1	4.9	5.7
	सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति	7.4	8.9	10.4
	भारित औसत उधार दर	12.1	12.6	13.0
	जीडीपी अनुपात की तुलना में पण्या निर्यात[8]	15.5	14.3	13.1
2015-16	वास्तविक जीडीपी वृद्धि	6.3	4.1	2.1
	सकल राजकोषीय घाटा	3.6	4.8	6.0
	सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति	7.2	9.5	11.6
	भारित औसत उधार दर	12.1	12.8	13.5
	जीडीपी अनुपात की तुलना में पण्या निर्यात	16.5	14.7	13.0

* वित्तीय वर्ष : 2014-15 की पिछली दो तिमाहियों के लिए औसत संख्या।

[3] विस्तृत कार्य-प्रणाली तथा विभिन्न बीएसआई आयामों के अंतर्गत प्रयुक्त मूल संकेतक अनुबंध 2 में दिए गए हैं।
[4] एफएसआर, जून 2014 (मार्च 2014 के अंत के डाटा के संदर्भ में)
[5] सीआरएआर, टिअर -II पूंजी की तुलना में टियर -I पूंजी तथा लीवरेज अनुपात के आधार पर सुदृढ़ता मापी गई।
[6] घरेलू परिचालन को शामिल करते हुए अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के पर्यवेक्षी डाटा के आधार पर।
[7] ये दबाव परिदृश्य कल्पित- अति प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों के चलते अभावग्रस्त एवं रूढ़िवादी आकलन है और इसे पूर्वानुमान अथवा प्रत्याशित परिणाम के रूप में न माना जाए।
[8] एससीबी की आस्ति गुणवत्ता पर आरईईआर के माध्यम से विनिमय दर के प्रभाव को भी शामिल किया गया है। यह प्रभाव बहुत ही कम रहा। ब्यौरा अनुबंध 2 में दिया गया है।

लिए 1 मानक विचलन (एसडी) तक तथा भारी जोखिम के लिए 1.25 से 2 मानक विचलन के आधार पर प्राप्त किए गए (10 वर्ष का ऐतिहासिक डाटा)।

प्रणाली स्तरीय ऋण जोखिम

2.17 ऋण जोखिम हेतु समष्टि दबाव परीक्षण से यह पता चलता है कि आधार-रेखा परिदृश्य जो अगले वित्तीय वर्ष के दौरान समग्र समष्टि आर्थिक परिदृश्यों में सुधार की उम्मीद रखता है, के अंतर्गत सभी एससीबी के जीएनपीए अनुपात जो सितंबर 2014 के अंत तक 4.5 प्रतिशत था, वह घटकर मार्च 2016 तक 4.0 प्रतिशत हो जाने की संभावना है। तथापि, यदि समष्टि आर्थिक परिस्थितियां बिगड़ती हैं तो जीएनपीए अनुपात में शायद और वृद्धि हो सकती है तथा एक विकट दबाव परिदृश्य के चलते यह मार्च 2016 तक लगभग 6.3 प्रतिशत तक पहुँच सकता है। ऐसे विकट दबाव परिदृश्य के अंतर्गत एससीबी के प्रणाली स्तरीय सीआरएआर मार्च 2016 तक 9.8 प्रतिशत तक घट सकता है जो कि सितंबर 2014 में 12.8 प्रतिशत था (चार्ट 2.10)।

बैंक समूह स्तरीय ऋण जोखिम

2.18 बेहतर समष्टि आर्थिक परिस्थितियों के कल्पित आधार-रेखा परिदृश्य के अंतर्गत सरकारी क्षेत्र के बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार की गुंजाइश है लेकिन वे बैंक-समूहों के बीच उच्चतम जीएनपीए अनुपात रखना कायम रखेंगे (चार्ट 2.11)।

चार्ट 2.10 : एससीबी के प्रणालीगत स्तर पर जीएनपीए तथा सीआरएआर का अनुमान (विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत)

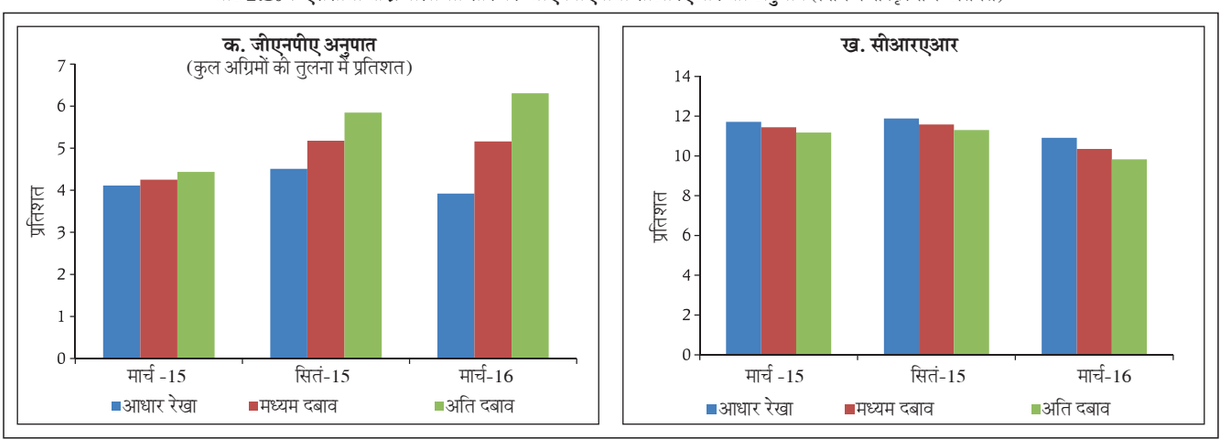

टिप्पणी : प्रणालीगत स्तर के जीएनपीए का अनुमान तीन अलग-अलग किंतु पूरक अर्थमितिक मॉडलों का प्रयोग करते हुए किया गया है : मल्टीवेरिएट रिग्रेशन, वेक्टर आटोरिग्रेसिव (जिसमें, समष्टि चरों की ऋण गुणवत्ता पर प्रतिक्रिया के प्रभाव तथा संपर्क प्रभाव को ध्यान में रखा जाता है) एवं क्वांटाइल रिग्रेशन (जो पुच्छ टेल जोखिम का समाना कर सकता है तथा समष्टिआर्थिक आघातों के अरैखिक प्रभावों को ध्यान में रख सकता है)। तीनों मॉडलों का औसत जीएनपीए यहां दिया गया है।

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन

चार्ट 2.11 : बैंक समूह-वार जीएनपीए एंव सीआरएआर के अनुमान (विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत)

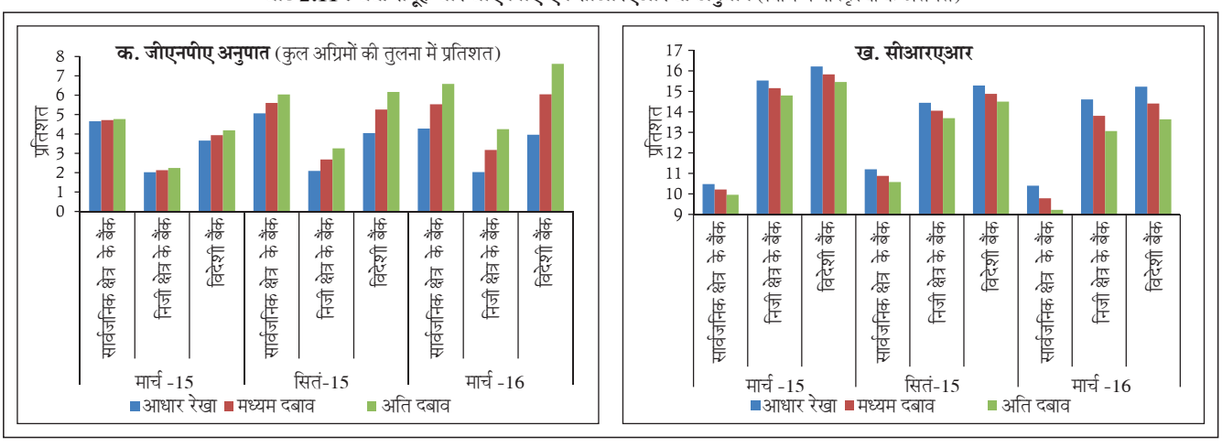

टिप्पणी : बैंक समूह-वार जीएनपीए का अनुमान दो अलग-अलग किंतु पूरक अर्थमितिक मॉडलों का प्रयोग करते हुए किया गया है : मल्टीवेरिएट रिग्रेशन तथा वेक्टर आटोरिग्रेसिव। दोनों मॉडलों का औसत जीएनपीए यहां दिया गया है।

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन।

2.19 अति दबाव परिदृश्य के चलते पीएसबी मार्च 2016 तक लगभग 9.2 प्रतिशत न्यूनतम सीआरएआर (सितंबर 2014 में यह 11.3 प्रतिशत था) दर्ज कर सकता है जोकि 9 प्रतिशत के न्यूनतम नियामक पूंजीगत अपेक्षा के करीब है (चार्ट 2.12)।

चार्ट 2.12 : अनुमानित क्षेत्रगत जीएनपीए (विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत)

(कुल अग्रिमों के प्रति प्रतिशत)

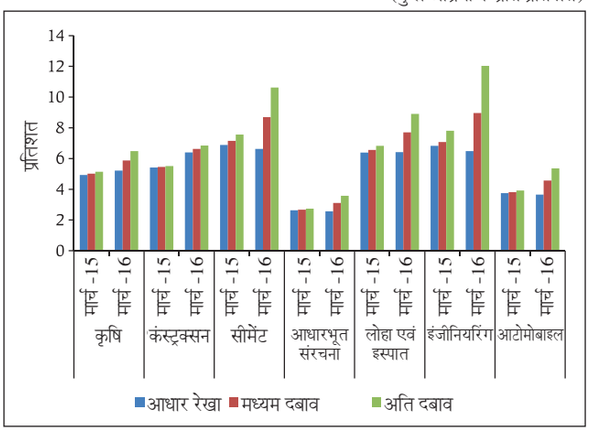

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन

क्षेत्रवार ऋण जोखिम

2.20 क्षेत्रवार ऋण जोखिम की एक समष्टि दबाव परीक्षण से यह पता चलता है कि अति दबाव परिदृश्य के चलते चयनित सात क्षेत्रों के बीच इंजीनियरिंग क्षेत्र से मार्च 2016 तक 12.0 प्रतिशत की उच्चतम एनपीए अनुपात दर्ज करने की अपेक्षा है और उसके बाद सीमेंट क्षेत्र (10.6 प्रतिशत) आता है (चार्ट 2.12)।

ऋण जोखिम हेतु हानियों[9] का आकलन : प्रावधानीकरण एवं पूंजी पर्याप्तता

2.21 आस्ति गुणवत्ता में चिरकालिक कमी के कारण, एससीबी की अपेक्षित हानि (ईएल) बढ़ रही है लेकिन यदि समष्टि आर्थिक परिस्थितियों में कल्पित सुधार होता है तो 2015-16 की दूसरी छमाही में इसमें कमी आ सकती है। विभिन्न बैंक समूहों - सरकारी क्षेत्र के बैंकों, निजी क्षेत्र के बैंकों तथा विदेशी बैंकों का वर्तमान प्रावधानीकरण[10] स्तर उनके क्रमशः कुल अग्रिमों के अनुपात में सितंबर 2014 के अंत में 3.2 प्रतिशत, 1.9 प्रतिशत तथा 3.9 प्रतिशत है। बैंक समूहों के बीच सरकारी क्षेत्र के बैंकों, जिनकी उच्चतम अपेक्षित हानि सितंबर 2014 में उनके कुल अग्रिमों का 3.2 प्रतिशत थी, यदि वे आधार-रेखा परिदृश्य के अंतर्गत अपेक्षित हानियों को पूरा कर भी लें तो भी वे प्रतिकूल समष्टि आर्थिक जोखिम परिदृश्यों[11] के चलते अपेक्षित हानियों को पूरा करने हेतु पर्याप्त प्रावधानीकरण करने के मामले में पीछे रहेंगे (चार्ट 2.13)।

चार्ट 2.13: संभावित हानियां : बैंक समूह-वार

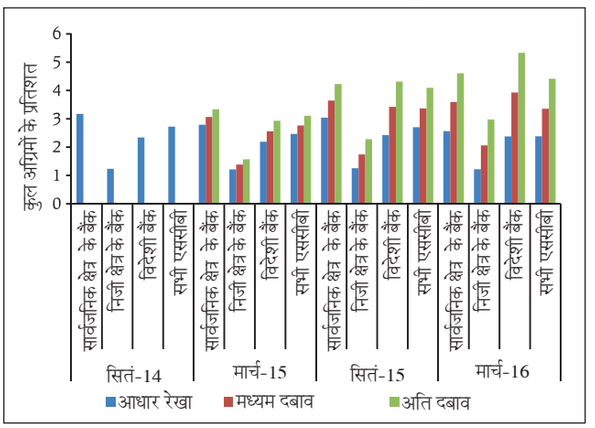

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन

[9] अनुमानित हानि के लिए अपनाई गई कार्य-प्रणाली अनुबंध 2 में दी गई हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अगले एक वर्ष के लिए प्रावधान और पूंजी जुटाने के उद्देश्य से अनुमानित हानि दृष्टिकोण (ईएल और यूएल) का प्रयोग करने की सिफारिश की गई है। इस उद्देश्य के लिए पीडी की गणना वार्षिक रिसाव के आधार पर की गई है। चूंकि इस अध्ययन का उद्देश्य एससीबी द्वारा अनुरक्षित प्रावधानीकरण और पूंजी की पर्याप्तता और अगले एक वर्ष में किए जाने वाले प्रावधान और पूंजी के अपेक्षित स्तर का अनुमान न लगाने का मूल्यांकन करना है, इसलिए यहां पर प्रयुक्त पीडी जीएनपीए पर आधारित है।

[10] प्रावधानों में ऋण हानियों हेतु प्रावधान, मानक अग्रिमों के लिए जोखिम प्रावधान तथा पुनर्रचित मानक अग्रिमों के लिए प्रावधान शामिल है।

[11] दबाव परिदृश्य सारणी 2.5 में समष्टि दबाव परीक्षण के अंतर्गत परिभाषित किए गए हैं।

2.22 गंभीर समष्टि आर्थिक दबाव परिस्थितियों के बावजूद भी विभिन्न बैंक समूहों के ऋण जोखिम से उत्पन्न हो रही अनुमानित अनपेक्षित हानियां (यूएल) तथा अपेक्षित गिरावट (ईएस) उनके द्वारा बनाये रखे कुल पूंजी (टीयर I और टीयर II) के वर्तमान स्तर से भी बहुत कम रहने की उम्मीद की जा रही है। सरकारी क्षेत्र के बैंकों, निजी क्षेत्र के बैंकों तथा विदेशी बैंकों ने सितंबर 2014 में कुल अग्रिमों की तुलना में कुल पूंजी का स्तर क्रमशः 12.5 प्रतिशत, 21.4 प्रतिशत तथा 36.0 प्रतिशत पर बनाए रखा (चार्ट 2.14 और 2.15)।

2.23 ऋण जोखिम से उत्पन्न अपेक्षित हानि (ईएल) और अप्रत्याशित हानि (यूएल) का बैंक-वार[12] आकलन यह दर्शाता है कि 20 बैंक (अधिकांश पीएसबी) उनके मौजूदा प्रावधानों के साथ उनकी अपेक्षित हानियों को पूरा करने में असमर्थ रहे। चयनित 60 बैंकों के कुल अग्रिमों में इन बैंकों का हिस्सा 32.8 प्रतिशत था। दूसरी ओर, केवल ऐसे दो बैंक (चयनित बैंकों के कुल अग्रिमों में 2.0 प्रतिशत हिस्सा के साथ) थे जिनसे कुल पूंजी की तुलना में उच्चतर अप्रत्याशित हानियों की उम्मीद की जा रही थी (चार्ट 2.16)।

चार्ट 2.14 : अप्रत्याशित हानियां : बैंक समूह-वार

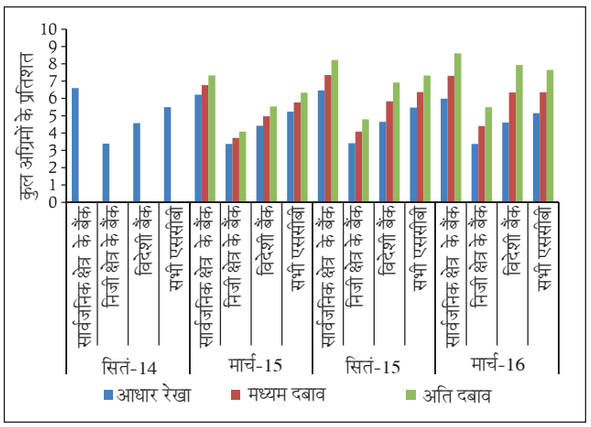

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन

चार्ट 2.15 : संभावित कमियां : बैंक समूह-वार

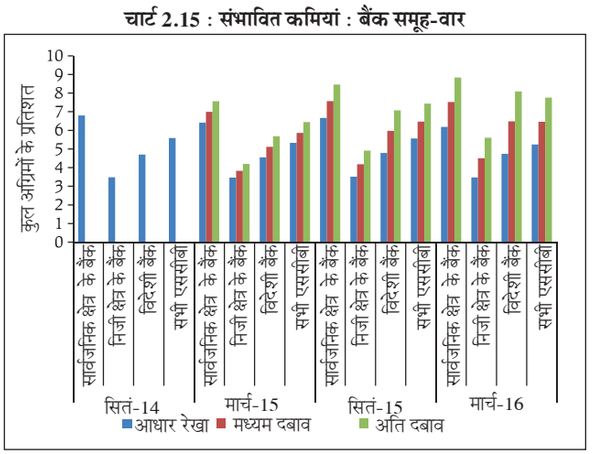

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन

चार्ट 2.16 : प्रत्याशित हानियां तथा अप्रत्याशित हानियां : बैंक-वार (सितंबर 2014)

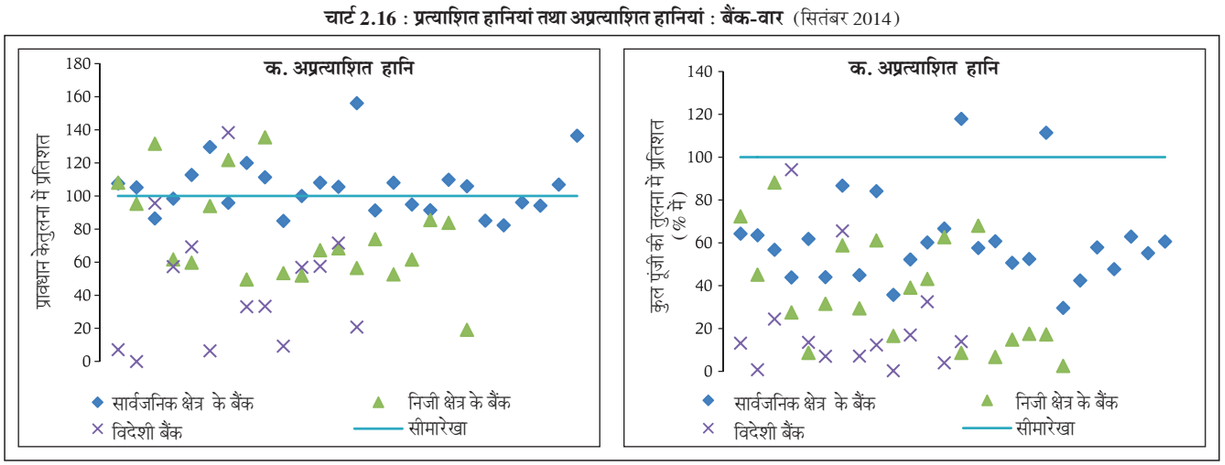

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन

[12] ईएल एवं यूएल का बैंक-वार अनुमान 60 एससीबी के लिए किया गया था जो एससीबी की कुल आस्तियों का 99 प्रतिशत भाग कवर करते हैं।

संवेदनशील विश्लेषण - बैंक स्तर[13]

2.24 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों (60 बैंक जिनका कुल बैंकिंग क्षेत्र आस्तियों में 99 प्रतिशत का हिस्सा है) पर विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत उनकी अतिसंवेदनशीलता और लचीलेपन आंकने के लिए विभिन्न एकल कारक संवेदनशील दबाव परीक्षण (ऊपर-नीचे) किए गए। ऋण, ब्याज दर और चलनिधि जोखिमों के संबंध में वाणिज्य बैंकों के लचीलेपन का अध्ययन अत्यधिक लेकिन संभाव्य संवेग देकर ऊपर-नीचे संवेदनशील विश्लेषण के माध्यम से किया गया। इनके परिणाम सितंबर 2014 के डाटा[14] पर आधारित हैं।

टॉप-डाउन दबाव परीक्षण

ऋण जोखिम

2.25 सितंबर 2014 की स्थिति के अनुसार बैंकों के लिए विभिन्न स्थिर ऋण आघातों के असर से पता चलता है कि प्रणालीगत स्तर पर दबावयुक्त सीआरएआर 9 प्रतिशत के अपेक्षित न्यूनतम स्तर से अधिक बना रहा (चार्ट 2.17)। 1 मानक विचलन (एसडी)[15] (आघात 2) की स्थिति में प्रणालीगत स्तर पर पूंजीगत हानियां लगभग 15 प्रतिशत हो सकती थीं। हालांकि, यदि उनके वार्षिक लाभों को हटा दिया जाए तो बैंकों के लाभ पर अधिक गंभीर प्रभाव पड़ेगा। दबाव परीक्षण के परिणामों से यह भी पता चलता है कि आघात 2 की परिकल्पना के तहत यदि सकल अनर्जक आस्तियों में वृद्धि हो जाए तो 16 बैंक सीआरएआर का अपेक्षित स्तर कायम नहीं रख पाएंगे। इनमें से अधिकांश सरकारी बैंक हैं जो राज्य सहकारी बैंकों की कुल आस्तियों का लगभग 28 प्रतिशत हिस्सा साझा करते हैं। 7 बैंकों के सीआरएआर का स्तर तो 8 प्रतिशत के स्तर से भी नीचे जा सकता है।

ऋण संकेंद्रण जोखिम

2.26 बैंकों के ऋण संकेंद्रण से संबंधित दबाव परीक्षण से पता चलता है कि विभिन्न दबाव परिदृश्यों के तहत छह बैंकों पर काफी अधिक प्रभाव पड़ा है। सीआरएआर के 9 प्रतिशत से कम हो जाने पर उनकी आस्तियां 8 प्रतिशत कम हो सकती हैं। चूक होने के परिकल्पित परिदृश्यों के तहत प्रणालीगत स्तर पर शीर्ष के एक, दो एवं तीन व्यक्तिगत उधारकर्ताओं से संबंधित पूंजीगत हानि क्रमशः

चार्ट 2.17 : ऋण जोखिम - आघात एवं उनके प्रभाव

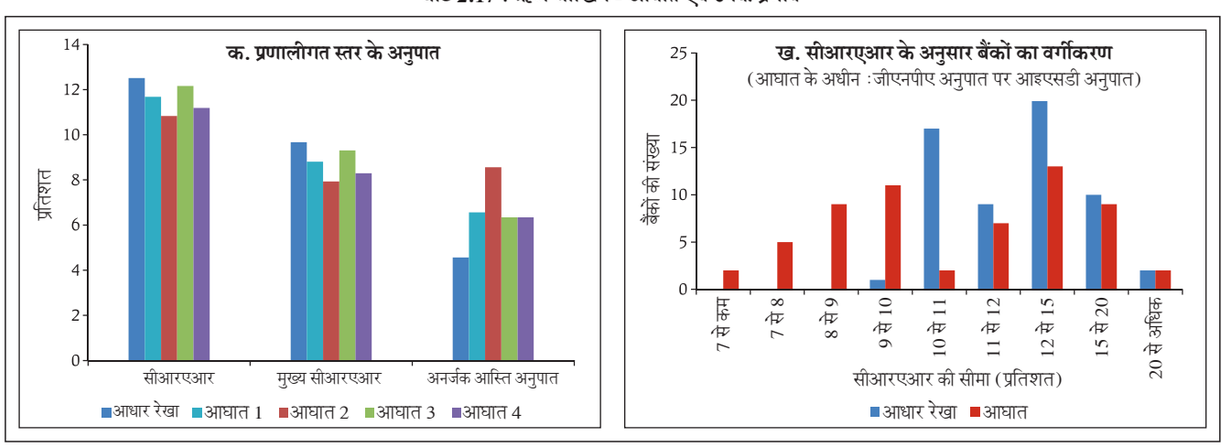

टिप्पणी : आघात 1 : सकल अनर्जक आस्ति अनुपात पर 0.5 मानक विचलन आघात आघात 2 : सकल अनर्जक आस्ति अनुपात पर 1 मानक विचलन आघात
आघात 3 : पुनर्रचित अग्रिमों में से 30 प्रतिशत सकल अनर्जक आस्ति बने (अवमानक श्रेणी)[16]
आघात 4 : पुनर्रचित अग्रिमों में से 30 प्रतिशत को बट्टा खाता में डाला गया (नुकसान की श्रेणी)।
स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन

[13] ऋण जोखिम के संबंध में समष्टिगत दबाव परीक्षण के अलावा संवेदनशीलता विश्लेषण भी किया गया। इनमें से पहले आघात सीधे आस्ति गुणवत्ता (जीएनपीए) को दिए गए और दूसरे आघात प्रतिकूल समष्टिआर्थिक परिस्थितियों के संबंध में थे। समष्टिगत दबाव परीक्षण प्रणाली, प्रमुख बैंक समूह तथा क्षेत्रगत स्तर भी किए गए जबकि संवेदनशीलता विश्लेषण प्रणाली तथा बैंक के समेकित स्तर पर किया गया। समष्टिगत दबाव परीक्षणों के केंद्र बिंदु ऋण जोखिम था किंतु संवेदनशीलता विश्लेषण में ऋण, ब्याज दर तथा चलनिधि जोखिमों को कवर किया गया।

[14] दबाव परीक्षणों के संबंध में विवरण के लिए कृपया अनुबंध 2 देखें।

[15] अनर्जक आस्ति अनुपात के मानक विचलन 10 वर्षों के तिमाही आंकड़े के आधार पर अनुमानित है।

[16] पुनर्गठित अग्रिमों से संबंधित आस्ति वर्गीकरण के लिए रिजर्व बैंक द्वारा मंजूर की गई छूट 1 अप्रैल 2015 से समाप्त कर दी जाएगी। आगे और विचार-विमर्श करने के लिए कृपया अध्याय III का संदर्भ लें (पैरा 3.26 एवं 3.27)।

चार्ट 2.18 : ऋण जोखिम : संकेंद्रण

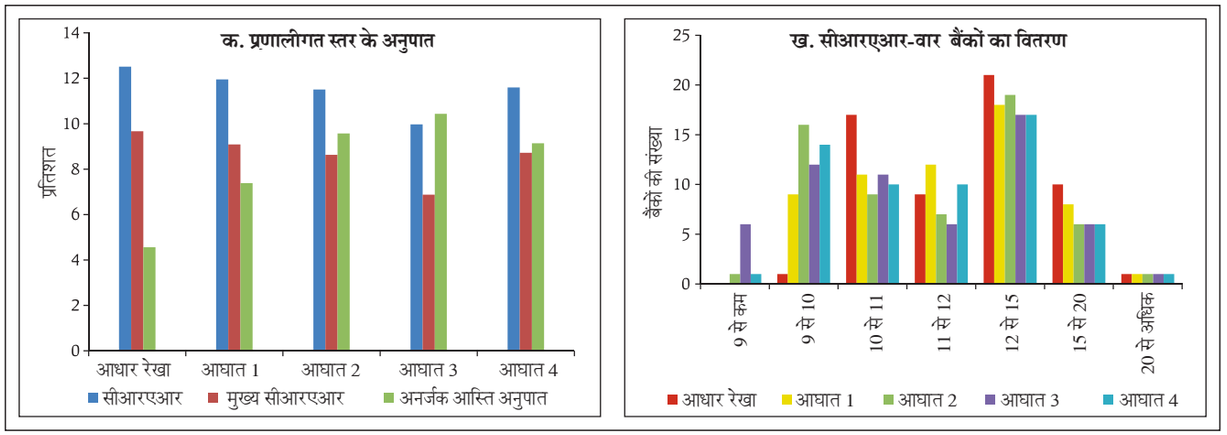

टिप्पणी : आघात 1: सबसे बड़े व्यक्तिशः उधारकर्ता की ओर से चूक
आघात 2: सबसे बड़े दो व्यक्तिशः उधारकर्ताओं की ओर से चूक
आघात 3: सबसे बड़े तीन व्यक्तिशः उधारकर्ताओं की ओर से चूक
आघात 4: सबसे बड़े समूह उधारकर्ता की ओर से चूक

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन।।

लगभग 5 प्रतिशत, 9 प्रतिशत एवं 14 प्रतिशत हो सकती है। सामूहिक रूप से उधार लेने वाले शीर्ष उधारकर्ता समूह के चूक करने के परिकल्पित परिदृश्यों के तहत प्रणालीगत स्तर पर पूंजीगत हानियां[17] लगभग 9 प्रतिशत हो सकती हैं। इसी परिदृश्य के तहत, कर पूर्व लाभ (पीबीटी) पर असर 202 प्रतिशत के उच्च स्तर तक हो सकता है और न्यूनतम 73 प्रतिशत हो सकता है। शीर्ष व्यक्तिगत उधारकर्ता, शीर्ष 2 व्यक्तिगत उधारकर्ताओं, शीर्ष 3 उधारकर्ताओं और शीर्ष सामूहिक उधारकर्ताओं द्वारा चूक होने के परिकल्पित परिदृश्य के तहत प्रणालीगत स्तर पर सीआरएआर पर सीधा प्रभाव क्रमशः 56, 100, 254 एवं 94 आधार अंक होगा। हालांकि, इन आघातों के तहत प्रणालीगत स्तर पर सीआरएआर 9 प्रतिशत से ऊपर बना रहेगा (चार्ट 2.18)।

क्षेत्रगत ऋण जोखिम

2.27 कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों/उद्योगों के एक्सपोजर के ऋण जोखिम की जांच क्षेत्रगत ऋण दबाव परीक्षणों के माध्यम से की जाती है। परिकल्पित आघात सकल अनर्जक आस्तियों के अनुपात में प्रत्येक क्षेत्र के लिए 5 प्रतिशत बिंदुओं की वृद्धि होने का था। संवेदनशीलता विश्लेषण के परिणामों से पता चला कि आघातों से प्रणालीगत स्तर की सकल अनर्जक आस्तियों में काफी वृद्धि होगी, जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव स्थावर संपदा के एक मात्र क्षेत्र पर पड़ेगा (सारणी 2.6)। पूंजी अनुपात के संबंध में आघात का प्रभाव सीमित था क्योंकि ऋण संविभाग का सिर्फ एक हिस्सा ही आघातग्रस्त

सारणी 2.6 : ऋण जोखिम : क्षेत्र

(प्रतिशत)

क्षेत्र स्तर			प्रणालीगत स्तर				
			सीआरएआर	टियर 1 सीआरएआर	सकल अनर्जक आस्ति अनुपात	पूंजी के प्रतिशत के रूप में नुकसान	लाभ के प्रतिशत के रूप में नुकसान
आधार रेखा:			12.5	9.7	4.6	-	-
	कुल अग्रिमों में हिस्सा	क्षेत्र का सकल अनर्जक आस्ति अनुपात	आघात 5 : प्रत्येक क्षेत्र में सकल अनर्जक आस्ति में प्रतिशतता बिंदु वृद्धि				
कृषि	12.6	5.4	12.3	9.4	5.2	2.4	17.6
ऊर्जा	9.0	1.4	12.3	9.5	5.0	1.6	11.7
स्थावर संपदा	17.4	4.6	12.2	9.3	5.4	3.3	24.5
दूरसंचार	1.6	4.8	12.5	9.6	4.6	0.3	2.3
सभी 4 क्षेत्र (कृषि + ऊर्जा + स्थावर संपदा + दूरसंचार)	41.0	4.0	11.7	8.8	6.6	7.7	57.9
प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र	34.1	5.2	11.8	9.0	6.3	6.4	47.7

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन।।

[17] पूंजीगत हानियों की गणना कुल पूंजी (टिअर I + टिअर II) पर की गई है।

हुआ। हालांकि, बैंक की लाभकारिता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है (कर पूर्व लाभ)।

ब्याज दर जोखिम

2.28 प्रणालीगत स्तर पर सीआरएआर में 74 आधार अंकों की कमी के साथ विभिन्न दबाव परिदृश्यों के अंतर्गत कारोबारी बही (बैंकों के एएफएस एवं एचएफटी पोर्टफोलियो पर सीधा प्रभाव) में ब्याज दर जोखिम का वहन किया जा सकता है। यह प्रभाव प्रतिफल वक्र में समानांतर ऊपर की ओर परिवर्तन होने (2.5 प्रतिशतता बिंदु) के कारण पड़ा। इसी प्रकार आघात के संबंध में पिछली वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (जून 2014) में सीआरएआर में 82 आधार अंकों की कमी रिपोर्ट की गई थी। भिन्न-भिन्न स्तरों पर देखा जाए तो 5.1 प्रतिशत आस्तियों को समाहित करने वाले तीन बैंकों पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। प्रणालीगत स्तर पर कुल पूंजीगत हानि लगभग 6.6 प्रतिशत होगी। बैंकों की एचटीएम पोर्टफोलियो के संबंध में प्रतिफल वक्र में 2.5 प्रतिशत बिंदुओं के समानांतर ऊपर की ओर परिवर्तन के परिकल्पित आघात को यदि बाजार मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया गया तो इससे सीआरएआर में लगभग 261 आधार बिंदुओं की महत्त्वपूर्ण कमी आएगी (पिछली वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट में 280 आधार अंकों का प्रभाव रिपोर्ट किया गया था) जो 25 बैंकों को प्रभावित करेगी। प्रतिफल वक्र में समानांतर नीचे की ओर परिवर्तित होने (2.5 प्रतिशतता बिंदु) के परिकल्पित आघात के तहत अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की बैंकिंग बही[18] में उनके लाभ (कर पूर्व) से संबंधित आय में लगभग 50 प्रतिशत की कमी हो सकती है।

चलनिधि जोखिम

2.29 चलनिधि जोखिम विश्लेषण में बैंकों से जमाराशि निकालने के परिदृश्यों को शामिल किया जाता है। विश्लेषण में चलनिधि युक्त आस्तियों[19] की पांच परिभाषाओं का प्रयोग किया जाता है। इन परिभाषाओं के अनुसार, चलनिधि युक्त आस्तियों में नकद राशि, आरक्षित नकदी निधि अनुपात (सीआरआर), अंतरबैंक जमाराशियां एवं विभिन्न रूपों में किया गया निवेश शामिल होते हैं। विभिन्न चलनिधियुक्त आस्ति अनुपातों[20] का निर्धारण बेसलाइन परिदृश्य के तहत विभिन्न परिभाषाओं का प्रयोग करते हुए किया गया। दबाव परिदृश्यों का गठन बैंकों से जमाराशि निकालने पर बैंक की क्षमता का परीक्षण करने के लिए किया गया जिसमें सिर्फ उनकी चलनिधि युक्त आस्तियों का प्रयोग किया गया। विश्लेषण से पता चलता है कि दबाव के परिदृश्य में चलनिधि पर दबाव था किंतु बैंक जमाकर्ताओं द्वारा अचानक और अप्रत्याशित आहरण किए जाने का सामना उनके सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) निवेशों की मदद से कर पाए (चार्ट 2.19)।

चार्ट 2.19 : चलनिधि जोखिम (जमाराशि का तेजी से निकलना)

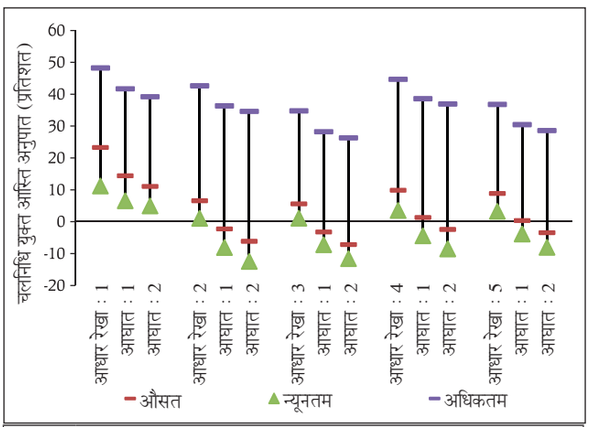

चलनिधि युक्त आस्तियों की परिभाषा	
1	नकद + अतिरिक्त सीआरआर + एक महीने के भीतर परिपक्व होने वाले अंतर बैंक जमा + एसएलआर निवेश + पात्र निर्यात ऋण पुनर्वित्तीयन (ईसीआर)
2	नकद + अतिरिक्त सीआरआर + एक महीने के भीतर परिपक्वता वाले अंतर बैंक जमा + एक महीने के अंदर परिपक्व होने वाले निवेश + पात्र निर्यात ऋण पुनर्वित्तीयन (ईसीआर)
3	नकद + अतिरिक्त सीआरआर + एक महीने के अंदर परिपक्वता वाले अंतर बैंक जमा + अतिरिक्त एसएलआर निवेश + पात्र निर्यात ऋण पुनर्वित्तीयन (ईसीआर)
4	नकद + सीआरआर + एक महीने के अंदर परिपक्व होने वाले अंतर बैंक जमा + एक महीने के अंदर परिपक्व होने वाले निवेश + पात्र निर्यात ऋण पुनर्वित्तीयन (ईसीआर)
5	नकद + सीआरआर + एक महीने के अंदर परिपक्व होने वाले अंतर बैंक जमा + अतिरिक्त एसएलआर निवेश + पात्र निर्यात ऋण पुनर्वित्तीयन (ईसीआर)
इन परिभाषाओं में से प्रत्येक के लिए आधार रेखा तथा दो आघातों वाले परिदृश्यों की रचना की गई।	
चलनिधि आघात	
आघात 1	अल्पावधि (1 या 2 दिन) में 10 प्रतिशत जमाराशि का आहरण (संचयी)
आघात 2	लगातार 5 दिनों के लिए 3 प्रतिशत जमाराशि का आहरण

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टाफ का आकलन।।

[18] दर के प्रति संवेदनशील आस्तियों और देयताओं के एक्सपोजर गैप को ध्यान में रखते हुए तथा एएफएस एवं एचएफटी पोर्टफोलियो को छोड़कर बैंकिंग बुक पर आय के प्रभाव की गणना सिर्फ एक वर्ष के लिए की गई है।

[19] चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर), चलनिधि जोखिम निगरानी उपकरणों तथा चलनिधि कवरेज अनुपात की घोषणा संबंधी मानक दिनांक 9 जून 2014 के परिपत्र डीबीओडी.बीपी.बीसी. 120/21.04.098/2013-147 के माध्यम से जारी किए गए थे। चलनिधि कवरेज अनुपात को 1 जनवरी 2015 से चरणबद्ध ढंग से प्रारंभ किया जाएगा जिसके तहत न्यूनतम 60 प्रतिशत की आवश्यकता होगी जो 1 जनवरी 2019 तक बढ़कर न्यूनतम 100 प्रतिशत हो जाएगी।

[20] चलनिधि आस्ति अनुपात = चलनिधियुक्त आस्तियां/कुल आस्तियां * 100. आघात परिदृश्य के अधीन चलनिधियुक्त आस्तियों के ऋणात्मक अनुपात से अपेक्षित जमाराशि आहरण को पूरा करने में प्रतिशत कमी का पता चलता है।

2.30 ऋण की अतिरिक्त मांग को पूरा करने की बैंकों की क्षमता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्वीकृत/वचनबद्ध/प्रत्याभूत (अनाहरित कार्यशील पूंजी की स्वीकृत सीमा, अनाहरित वचनबद्ध क्रेडिट लाइन एवं साख पत्रों तथा गारंटियों को ध्यान में रखते हुए) क्रेडिट लाइनों के अप्रयुक्त हिस्से पर आधारित एक अन्य चलनिधि जोखिम विश्लेषण किया गया। बैंकों द्वारा उनके नकद शेषों, अतिरिक्त सीआरआर, अल्पावधि अंतरबैंक जमाराशियों (एक माह की परिपक्वता), अतिक्ति एसएलआर एवं पात्र निर्यात ऋण पुनर्वित्त (ईसीआर) का उपयोग करते हुए पूरा किया जाना था। प्रमुख प्रभाव अनारहरित कार्यशील पूंजी सीमाओं के प्रयोग के कारण पड़ा तथा लगभग 12 छोटे बैंक तो अपनी वर्तमान चलनिधियुक्त आस्तियों का प्रयोग करते हुए ऋण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा ही नहीं कर पाए (आघात 1)। हालांकि, यदि यह माना जाता कि ग्राहकों द्वारा अनाहरित स्वीकृत कार्यशील पूंजी का सिर्फ एक हिस्सा (50 प्रतिशत) प्रयोग किया जाएगा तो प्रभावित बैंकों की संख्या काफी कम अर्थात छह होती (सारणी 2.7)।

सारणी 2.7 : चलनिधि जोखिम : अनाहरित सीमाओं/आकस्मिकताओं की न्यागमन/अनाहरित ऋण की वचनबद्ध श्रृंखला/ साख पत्र गारंटियों की न्यागमन की उपयोगिता

	प्रणालीगत स्तर		प्रभावित बैंक		
	उपयोग न किए गए ऋण का आकार (बकाया अग्रिमों की तुलना में %)	चलनिधि युक्त आस्तियों का अनुपात (%)	आघात के बाद चलनिधि की कमी वाले बैंकों की संख्या	जमाराशि में हिस्सा (%)	आस्ति में हिस्सा (%)
चलनिधि युक्त आस्तियां : नकद, अतिरिक्त सीआरआर, एक महीने के अंदर परिपक्व होने वाले अंतर बैंक जमा, अतिरिक्त एसएलआर, ईसीआर					
आधार रेखा:	-	5.6	-	-	-
आघात 1:	3.2	3.5	12	8.5	9.5
आघात 2:	1.4	4.4	6	4.2	5.0
आघात 3:	0.4	5.0	2	1.6	2.0
आघात 4:	0.2	5.1	1	0.8	1.2
आघात 5:	0.4	5.0	0	0.0	0.0

टिप्पणी : चलनिधि आघात

आघात 1: अनाहरित स्वीकृत सीमा - कार्यशील पूंजी - पूर्णतः प्रयुक्त
आघात 2: अनाहरित स्वीकृत सीमा - कार्यशील पूंजी - अंशतः प्रयुक्त (50 प्रतिशत)
आघात 3: ग्राहकों को वचनबद्ध अनाहरित ऋण श्रृंखला - पूर्णतः मांगी गई
आघात 4: ग्राहकों को वचनबद्ध अनाहरित ऋण श्रृंखला - अंशतः मांगी गई (50 प्रतिशत)
आघात 5: ग्राहकों को प्रदत्त साख पत्र/गारंटियां - न्यागमन

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टॉफ का आकलन।।

बॉटम-अप दबाव परीक्षण - बैंकों का व्युत्पन्नियों का पोर्टफोलियो

2.31 बैंकों के व्युत्पन्नियों के पोर्टफोलियो में हाल के समय में अपेक्षाकृत कमी आई है। व्युत्पन्नियों के पोर्टफोलियो का समकक्ष ऋण तुलनपत्र में दर्शाई गई आस्तियों का लगभग 4 प्रतिशत ही है। हालांकि, विदेशी बैंकों के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो का आकार काफी रहा जो सितंबर 2014 में उनके तुलनपत्र में दर्शाई गई आस्तियों का 34 प्रतिशत था (चार्ट 2.20)।

चार्ट 2.20 : अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो की प्रवृत्ति (ऋण समतुल्य)

(तुलन पत्र आस्तियों की तुलना में प्रतिशत)

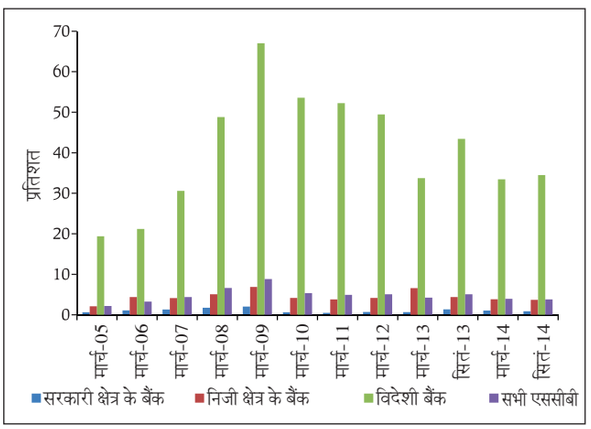

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

2.32 चुनिंदा प्रतिदर्श बैंकों[21] के संबंध में 30 सितंबर 2014 की संदर्भ तारीख के अनुसार व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो पर श्रृंखलाबद्ध (बहुत से) बॉटम-अप दबाव परीक्षण (संवेदनशीलता विश्लेषण) किए गए। प्रतिदर्श में शामिल किए गए बैंकों ने ब्याज तथा विदेशी मुद्रा विनिमय दरों से संबंधित चार अलग-अलग आघातों के परिणामों की रिपोर्ट भेजी। ब्याज दरों से संबंधित आघात 100 से

[21] व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो से संबंधित दबाव परीक्षण चुनिंदा 20 बैंकों के नमूनों पर किया गया, जो राज्य सहकारी बैंकों की कुल आस्ति का लगभग 55 प्रतिशत हिस्सा निर्मित करता है (पद्धतियों के विवरण के लिए अनुलग्नक 2 देखें)।

250 आधारभूत अंकों तक दायराबद्ध रहे, जबकि विदेशी मुद्रा विनिमय दरों के संबंध में आघातों में 20 प्रतिशत वृद्धि/कमी मानी गई। विशिष्ट आघातों के संबंध में दबाव परीक्षण एकल (स्टेंड-अलोन) आधार पर किए गए।

2.33 प्रतिदर्शों में, बैंकों के लिए 30 सितंबर 2014 की स्थिति के अनुसार उनके तुलन पत्र में दशाई गई आस्तियों के अनुपात के रूप में व्युत्पन्नियों के पोर्टफोलियो को बाजार दरों के आधार पर निर्धारित करने का प्रभाव सरकारी क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) एवं निजी बैंकों (पीबी) के साथ परिवर्तित हुआ, जिसमें मूल्यों में मामूली वृद्धि हुई जबकि विदेशी बैंकों का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक रहा। सितंबर 2014 में बैंकों का निवल बाजार आधारित मूल्य (एमटीएम) धनात्मक रहा (चार्ट 2.21)।

2.34 दबाव परीक्षण के परिणामों से पता चला कि प्रतिदर्श बैंकों पर ब्याज दर आघातों का औसत निवल प्रभाव बहुत अधिक नहीं था। हालांकि, बैंकों पर विदेशी मुद्रा संबंधी आघातों का अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़ा (चार्ट 2.22)।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

तुलन पत्र परिचालन

2.35 2013-14 में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की आस्तियों में लगभग 16 प्रतिशत की स्थिर वृद्धि बनी रही। वृद्धि होने का मुख्य कारण देयताओं की दृष्टि से, उधार लेना तथा नाबार्ड एवं प्रायोजित बैंकों द्वारा पूंजी उपलब्ध कराना और आस्तियों की दृष्टि से, ऋण एवं अग्रिम रहे।

लाभप्रदता

2.36 अनंतिम परिणामों के अनुसार 2013-14 में सभी 57 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों ने वर्ष के दौरान उनका निवल लाभ 18.5 प्रतिशत बढ़ने के साथ लाभ होने की सूचना दी है। पिछले वर्ष की तुलना में निवल मार्जिन (निवल ब्याज दर औसत कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में) में भी सुधार हुआ (चार्ट 2.23)।

चार्ट 2.21 : कुल व्युत्पन्नियों का बाजार मूल्य - आधार रेखा

(तुलन पत्र आस्तियों की तुलना में प्रतिशत)

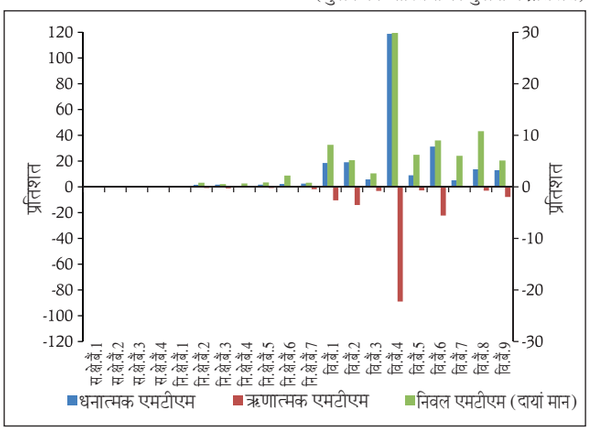

टिप्पणी : स.क्षे.बैं. : सरकारी क्षेत्र का बैंक नि.क्षे.बैं. : निजी क्षेत्र के बैंक वि.बैं. : विदेशी बैंक
स्रोत : प्रतिदर्श बैंक (व्युत्पन्नियों के पोर्टफोलियो के संबंध में बॉटम-अप दबाव परीक्षण)

चार्ट 2.22 : दबाव परीक्षण - चुनिंदा बैंकों के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो पर आघातों का प्रभाव (आघात का प्रयोग किए जाने पर निवल एमटीएम में परिवर्तन)

(पूंजीगत निधियों की तुलना में प्रतिशत)

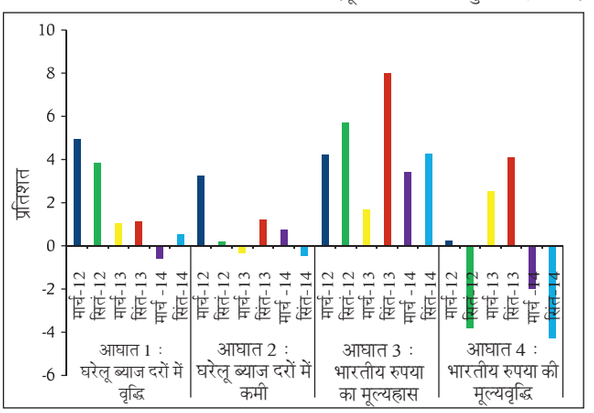

स्रोत : प्रतिदर्श बैंक (व्युत्पन्नियों के पोर्टफोलियो के संबंध में बॉटम-अप दबाव परीक्षण)

चार्ट 2.23 : क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की लाभप्रदता की प्रवृत्ति

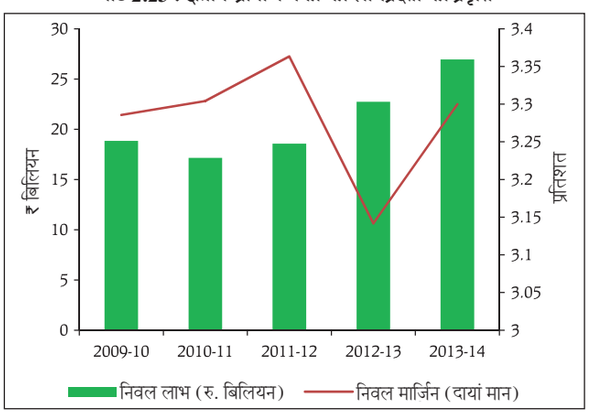

स्रोत : नाबार्ड

स्थानीय क्षेत्र बैंक

तुलन पत्र परिचालन एवं लाभप्रदता

2.37 वर्तमान में कुल चार स्थानीय क्षेत्र बैंक (एलएबी) कार्यशील हैं। 2013-14 के दौरान उनकी आस्तियों में 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उनके निवल लाभ में 21 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई जिसका कारण ब्याज व्यय में वृद्धि को माना जा सकता है जो उनकी आय से अधिक रहा (चार्ट 2.24)।

चार्ट 2.24 : स्थानीय क्षेत्र बैंकों की आस्तियों पर प्रतिफल एवं निवल ब्याज मार्जिन

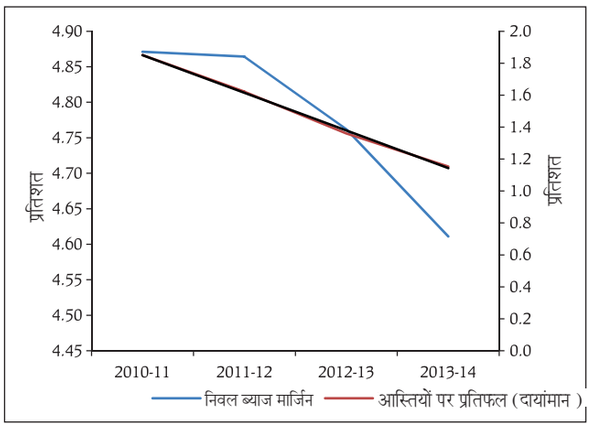

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

शहरी सहकारी बैंक

तुलन पत्र परिचालन

2.38 शहरी सहकारी बैंकों के तुलन पत्रों में 2013-14 के दौरान स्थिर वृद्धि देखी गई (चार्ट 2.25)। देयताओं में इस वृद्धि का कारण उनकी अन्य देयताओं तथा जमाराशियों में वृद्धि होना था। समेकन के पश्चात, 2013-14 में शहरी सहकारी बैंकों की संख्या थोड़ी कम होकर 1589 रह गई जो एक वर्ष पहले 1600 से अधिक थी।

2.39 2013-14 में शहरी सहकारी बैंकों का ऋण-जमा अनुपात लगभग 2 प्रतिशतता बिंदु घटा और निवेश-जमा अनुपात में भी थोड़ा सुधार हुआ (चार्ट 2.26)।

चार्ट 2.25 : शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) की संख्या तथा उनकी आस्तियों में वृद्धि

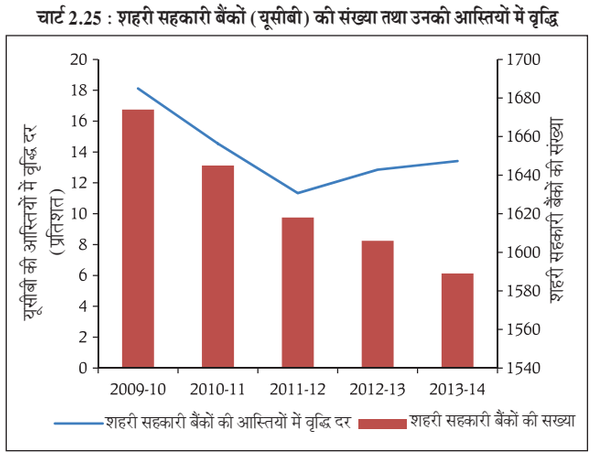

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

चार्ट 2.26 : अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की तुलना में शहरी सहकारी बैंकों से संबंधित ऋण-जमा तथा निवेश-जमा अनुपात

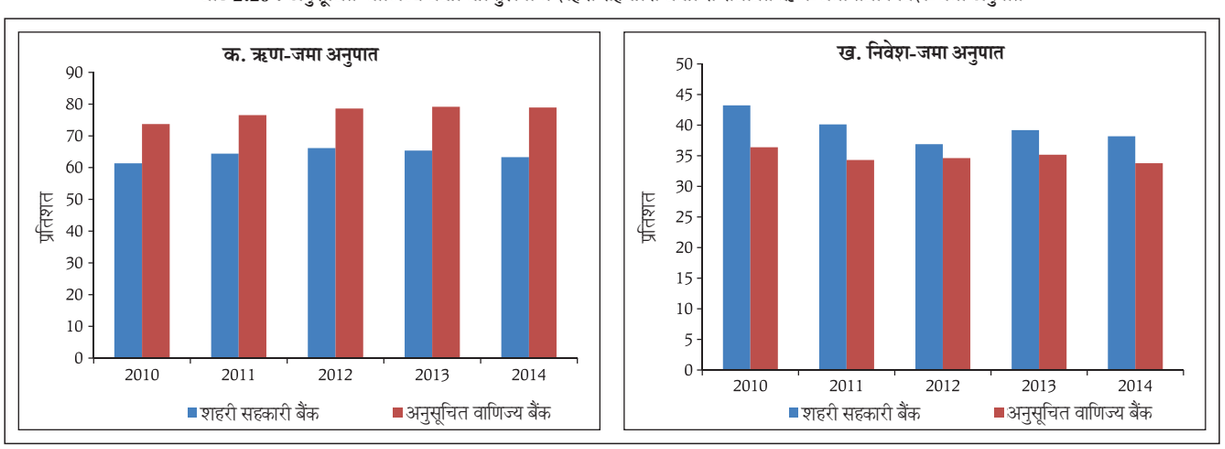

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा बैंकों के वार्षिक लेखा

लाभप्रदता

2.40 पिछले वर्ष निवल लाभ में हुई 25 प्रतिशत की कमी की तुलना में 2013-14 के दौरान शहरी सहकारी बैंकों का निवल लाभ 31 प्रतिशत बढ़ा। हालांकि, वर्ष के दौरान आय एवं व्यय -दोनों में कमी आई। प्रावधानों एवं आकस्मिक निधियों तथा करों में तेजी से गिरावट होने के परिणामस्वरूप उनका निवल लाभ बढ़ा। परिणामस्वरूप, वर्ष के दौरान शहरी सहकारी बैंकों की आस्तियों पर प्रतिफल (आरओए) तथा इक्विटी पर प्रतिफल (आरओई) में क्रमशः 0.9 प्रतिशत एवं 9.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि 2012-13 के दौरान इनमें 0.8 प्रतिशत एवं 7.2 प्रतिशत वृद्धि हुई थी।

अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक

निष्पादन

2.41 प्रणालीगत स्तर[22] पर अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों (एसयूसीबी) का सीआरएआर सितंबर 2014 में बढ़कर 12.7 प्रतिशत हो गया जो मार्च 2014 में 12.4 प्रतिशत था। हालांकि, असमग्र स्तर पर सात बैंक सीआरएआर के अपेक्षित 9 प्रतिशत के स्तर को बनाए रखने में विफल रहे। सकल अनर्जक आस्तियों (जीएनपीए) के रूप में मापे जाने पर अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट आई और उनके प्रावधान-कवरेज अनुपात भी काफी घट गए (सारणी 2.8)।

सारणी 2.8 : अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों की वित्तीय मजबूती के चुनिंदा संकेतक

(प्रतिशत)

वित्तीय मजबूती के संकेतक	मार्च-14	सितं-14
सीआरएआर	12.4	12.7
सकल अग्रिमों की तुलना में सकल अनर्जक आस्तियां	5.5	7.4
आस्तियों पर प्रतिफल (वार्षिकीकृत)	0.7	0.9
चलनिधि अनुपात	35.1	35.5
प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर)	71.4	53.7

टिप्पणी :1. आंकड़े अनंतिम हैं

2. चलनिधि अनुपात = (नकद + बैंकों से बकाया + एसएलआर निवेश)/कुल आस्तियां *100
3. प्रावधान कवरेज अनुपात का समेकन 'सकल अनर्जक आस्तियों के प्रतिशत के रूप में धारित अनर्जक आस्तियों' के रूप में किया गया है।

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।.

दबाव परीक्षण

ऋण जोखिम

2.42 अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों के लिए ऋण जोखिम का निर्धारण करने के लिए दबाव परीक्षण 30 सितंबर 2014 की स्थिति के अनुसार अनंतिम आंकड़ों का प्रयोग करते हुए किया गया। ऋण जोखिम के आघातों का अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों के सीआरएआर पर प्रभाव का प्रेक्षण चार अलग-अलग परिदृश्यों[23] के अंतर्गत किया गया। परिणामों से पता चला कि अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों का प्रणालीगत स्तर का सीआरएआर, अंतिम परिदृश्य (सकल अनर्जक आस्तियों में 1 एसडी वृद्धि, जिसे नुकसान हुए अग्रिम के रूप में वर्गीकृत किया जाता है) को छोड़कर, विनियामकीय अपेक्षित न्यूनतम स्तर से ऊपर बना रहा। यद्यपि, अलग से देखा जाए तो बहुत से बैंक (चौथे परिदृश्य के अंतर्गत 50 में से 28 बैंक) सीआरएआर के अपेक्षित स्तर को कायम नहीं रख पाएंगे।

चलनिधि जोखिम

2.43 चलनिधि से संबंधित दबाव परीक्षण दो अलग-अलग परिदृश्यों का प्रयोग करते हुए किया गया जिसमें यह माना गया कि एक से 28 दिनों की समयावधि में नकद का बहिर्वाह 50 प्रतिशत एवं 100 प्रतिशत होगा। इसके अलावा, यह भी माना गया कि दोनों परिदृश्यों के अंतर्गत नकद के अंतर्वाह में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। दबाव परीक्षण के परिणामों से पता चलता है कि दबावपूर्ण परिदृश्य में अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों पर (परिदृश्य I के तहत 50 बैंकों में से 24 बैंक तथा परिदृश्य II के तहत 38 बैंक) काफी प्रभाव पड़ेगा।

ग्रामीण सहकारिता[24]

अल्पावधि ग्रामीण ऋण सहकारिता

राज्य सहकारी बैंक

तुलन पत्र परिचालन

2.44 2012-13 के दौरान राज्य सहकारी बैंकों (एसटीसीबी) के समग्र तुलन पत्र के आकार में थोड़ी कमी आई और यह पिछले वर्ष के 14.4 प्रतिशत के स्तर से घटकर 10.2 प्रतिशत रह गया। जमाराशियों में थोड़ी वृद्धि होने के बावजूद यह कमी प्राथमिक रूप

[22] 50 अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों की प्रणाली।

[23] चार परिदृश्य इस प्रकार हैं i) सकल अनर्जक आस्तियों में 0.5 एसडी आघात वृद्धि (अवमानक अग्रिमों के रूप में वर्गीकृत), ii) सकल अनर्जक आस्तियों में 0.5 प्रतिशत आघात वृद्धि (नुकसान हुए अग्रिमों के रूप में वर्गीकृत), iii) सकल अनर्जक आस्तियों में 1 एसडी आघात वृद्धि (अवमानक अग्रिमों के रूप में वर्गीकृत) एवं iv) सकल अनर्जक आस्तियों में 1 एसडी आघात वृद्धि (नुकसान हुए अग्रिमों के रूप में वर्गीकृत)। एसडी के अनुमान में पिछले 10 वर्षों के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

[24] ग्रामीण सहकारिता से संबंधित आंकड़ों की उपलब्धता में कमी को देखते हुए यह खंड वर्ष 2012-13 पर आधारित है।

से उनके उधारों में गिरावट के कारण थी, जो उनकी कुल देयताओं का लगभग 30 प्रतिशत होता है(चार्ट 2.27)।

चार्ट 2.27 : राज्य सहकारी बैंकों के तुलन पत्रों के चुनिंदा सूचक

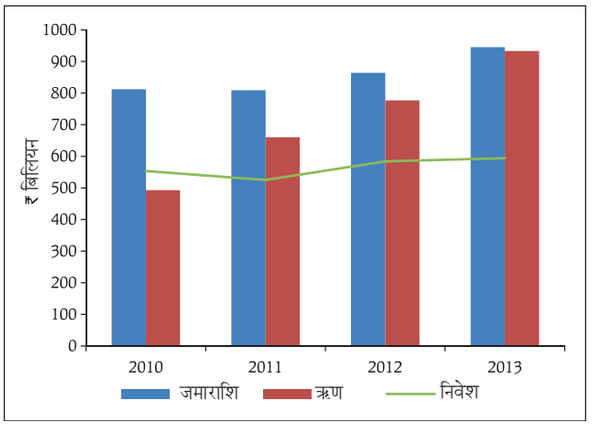

स्रोत : नाबार्ड

लाभप्रदता

2.45 पिछले वर्ष की प्रवृत्ति को जारी रखते हुए 2012-13 में राज्य सहकारी बैंकों के निवल लाभ में 11.0 बिलियन रुपए की वृद्धि हुई, जो पिछले वर्ष 6.2 बिलियन रुपए थी। कुल आय में (ब्याज एवं गैर-ब्याज -दोनों आय) वृद्धि होने के बाद, जो उनके कुल व्यय में वृद्धि से अधिक रही, प्रावधानों तथा आकस्मिताओं में हुई वृद्धि का भी निवल लाभ में हुई वृद्धि में योगदान रहा।

आस्ति गुणवत्ता

2.46 2012-13 के दौरान राज्य सहकारी बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में थोड़ा सुधार होने के बावजूद सकल अनर्जक आस्तियों का अनुपात अभी भी 6.1 प्रतिशत के उच्च स्तर पर बना हुआ है (सारणी 2.9)।

जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक

तुलन पत्र परिचालन

2.47 2012-13 में जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक (डीसीसीबी) के समग्र तुलन पत्र की वृद्धि में कमी आई। वर्ष के दौरान आस्ति वृद्धि घटकर 13.3 प्रतिशत रह जाने से यह स्पष्ट हो जाता है। 2011-12 के दौरान वृद्धि 14.5 प्रतिशत थी।

सारणी 2.9 : ग्रामीण सहकारी बैंकों की मजबूती के संकेतक (अल्पावधिक)

(राशि रु. बिलियन में)

Item	राज्य सहकारी बैंक				जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक			
	मार्च के अंत की स्थिति के अनुसार		प्रतिशत परिवर्तन		मार्च के अंत की स्थिति के अनुसार		प्रतिशत परिवर्तन	
	2012	2013अ	2011-12	2012-13अ	2012	2013अ	2011-12	2012-13अ
1	2	3	4	5	6	7	8	9
अ. कुल एनपीए (i+ii+iii)	54	56	-3.7	3.9	161	181	8.8	12.0
i. अवमानक	16 (29.2)	21 (36.6)	-8.6	30.1	63 (38.9)	79 (43.6)	6.4	25.7
ii. संदिग्ध	24 (43.4)	20 (35.4)	-7.8	-15.3	71 (44.2)	76 (42.2)	13.9	7.1
iii. हानि	15 (27.4)	16 (28.0)	10.4	6.3	27 (17.0)	26 (14.2)	2.1	-6.5
आ. ऋण की तुलना में एनपीए अनुपात (%)	7.0	6.1	-	-	10.2	9.9	-	-
C. मांग की तुलना में वसूली का अनुपात (%) (पिछले वर्ष 30 जून की स्थिति में)	95.6	94.8	-	-	79.2	80.0	-	-

अ. : अनंतिम

टिप्पणियां : 1. कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल अनर्जक आस्तियों (एनपीए) का प्रतिशत हैं।

2. निरपेक्ष अंकों को ₹ बिलियन में पूर्णांकित किया गया है इसलिए प्रतिशत परिवर्तन थोड़ा भिन्न हो सकता है। .

स्रोत : नाबार्ड

लाभप्रदता

2.48 2012-13 में जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंक के निवल लाभ में कमी हुई जिसका मुख्य कारण ब्याज के साथ ही ब्याज से इतर आय में हुई थोड़ी वृद्धि रही (चार्ट 2.28)। बावजूद इसके कि वर्ष के दौरान प्रावधानों एवं आकस्मिक निधियों में भी तेजी से गिरावट आई।

आस्ति गुणवत्ता

2.49 जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंकों के प्रावधानों में कमी का प्राथमिक कारण 2011-12 एवं 2012-13 के बीच आस्ति गुणवत्ता में सुधार होना तथा समग्र सकल अनर्जक आस्ति अनुपात का 10.2 प्रतिशत से घटकर 9.9 प्रतिशत रह जाना था (चार्ट 2.29)। सुधार होने के बावजूद जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंकों की सकल अनर्जक आस्तियों का उच्च अनुपात चिंता का विषय बना रहा।

प्राथमिक कृषि ऋण सोसायटी

तुलन पत्र परिचालन

2.50 2012-13 के दौरान प्राथमिक कृषि ऋण सोसायटी (पीएसीएस) के तुलन पत्र के संबंध में चयनित संकेतकों का विश्लेषण कतिपय सकारात्मक परिवर्तन दर्शाता है। उनकी स्वाधिकृत निधियों में वृद्धि हुई और उधार में वृद्धि कम रही। वर्ष के दौरान बकाया ऋणों में उच्चतर वृद्धि भी पाई गई (चार्ट 2.30)।

चार्ट 2.28 : जिला मध्यवर्ती सहकारी बैंकों की लाभप्रदता की प्रवृत्ति

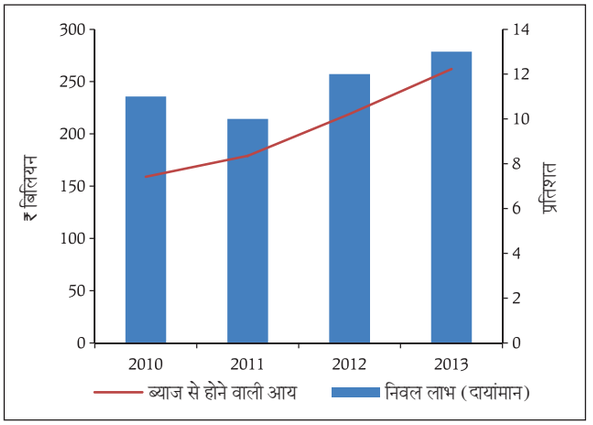

चार्ट 2.29 : ग्रामीण सहकारी बैंकों का अल्पावधि सकल अनर्जक आस्ति अनुपात

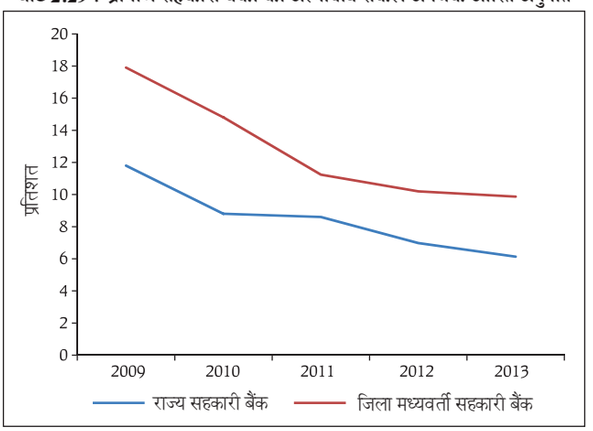

स्रोत : नाबार्ड

चार्ट 2.30 : प्राथमिक कृषि ऋण सोसायटियों से (पीएसीएस) बकाया ऋण में वृद्धि

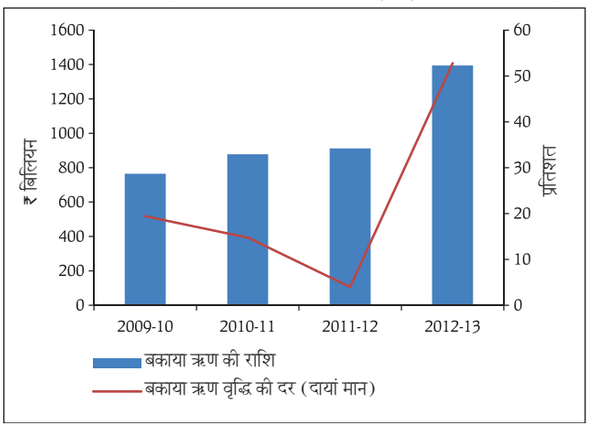

स्रोत : एनएएफएससीओबी

लाभप्रदता

2.51 मार्च 2013 के अंत में, देश में सभी पीएसीएस को लगभग 41 प्रतिशत को हानि हुई जबकि लगभग 46 प्रतिशत का लाभ हुआ। क्षेत्रीय स्तर पर पूर्वी क्षेत्र में हानिग्रस्त पीएसीएस की अधिकता थी (चार्ट 2.31)।

चार्ट 2.31: लाभप्रद/हानिग्रस्त पीएसीएस

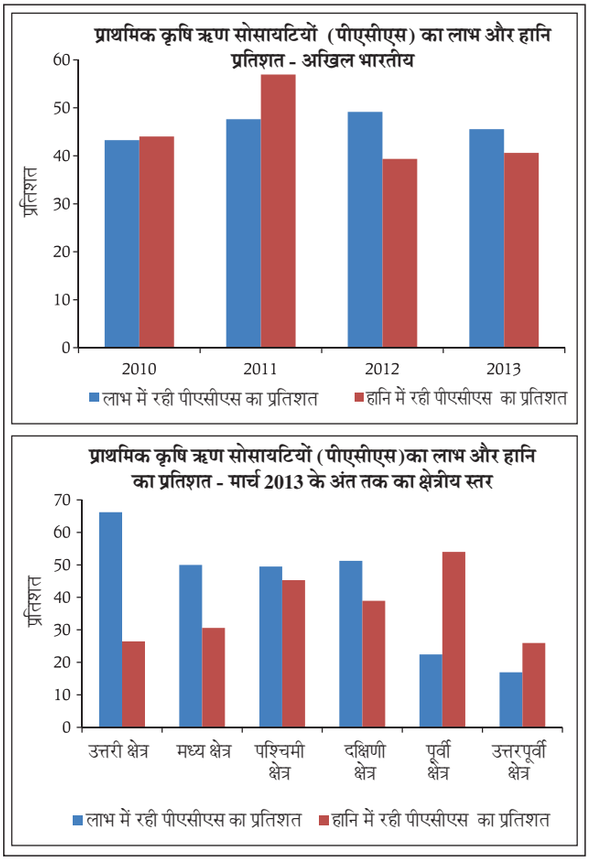

स्रोत : एनएएफएससीओबी

दीर्घावधि ग्रामीण ऋण सहकारिताएं

राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (एससीएआरडीबी)

तुलन पत्र के परिचालन

2.52 2012-13 में राज्य सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (एससीएआरडीबी) की तुलन पत्र वृद्धि में सतत रूप से गिरावट आई; यह देयता एवं आस्ति पक्ष के सभी प्रमुख मदों की बदौलत थी (चार्ट 2.32)।

लाभप्रदता

2.53 आस्ति पक्ष में लगातार गिरावट के अलावा एससीएआरडीबी को 2012-13 में 1.0 बिलियन रुपए की हानि हुई। हानि प्रमुख रूप से ऋण संबंधी हानियों के लिए किए गए भारी प्रावधान के कारण थी।

आस्ति गुणवत्ता

2.54 2012-13 में एससीएआरडीबी की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट आई जिसके कारण उनका जीएनपीए अनुपात बढ़कर 36 प्रतिशत हो गया (सारणी 2.10)।

चार्ट 2.32 : राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (एससीएआरडीबीएस) की तुलन पत्र सूचकांक की प्रवृत्ति

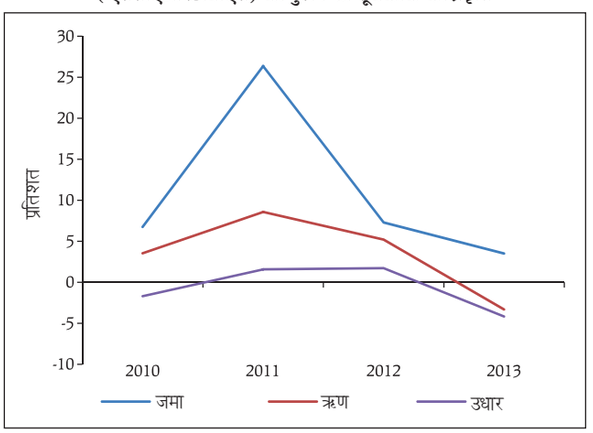

स्रोत : नाबार्ड

सारणी 2.10 : ग्रामीण सहकारी बैंक की मजबूती सूचकांक (दीर्घावधि)

(रु. बिलियन राशि में)

मद	एससीएआरडीबीएस				पीसीएआरडीबीएस			
	मार्च अंत में		प्रतिशत परिवर्तन		मार्च अंत में		प्रतिशत परिवर्तन	
	2012	2013अ	2011-12	2012-13अ	2012	2013अ	2011-12	2012-13अ
1	2	3	4	5	6	7	8	9
क. कुल जीएनपीएएस (i+ii+iii)	64	68	7.7	5.1	46	46	-5.0	-0.1
i. अवमानक	30 (46.1)	28 (41.9)	1.4	-4.4	21 (45.3)	20 (43.5)	-14.5	-4.3
ii. संदिग्ध	34 (53.6)	38 (56.2)	13.8	10.2	25 (53.9)	26 (56.1)	4.2	3.8
iii. नुकसान	0.2 (0.3)	1.2 (1.8)	8.3	603.0	0.3 (0.7)	0.2 (0.5)	58.1	-35.0
ख. ऋण की तुलना में जीएनपीए अनुपात (%)	33.1	36.0	-	-	36.7	37.1	-	-
ग. मांग की तुलना में वसूली अनुपात (%) (पिछले वर्ष के 30 जून तक)	40.2	32.3	-	-	47.3	42.7	-	-

अ : अनंतिम

टिप्पणियाँ : 1. कोष्ठक में दिये गये आंकड़े कुल एनपीए के प्रतिशत हैं।

2. समग्र आंकड़ों का रु. बिलियन में पूर्णांकन करते समय प्रतिशत में कुछ थोड़ीसी भिन्नता दर्शायी गयी है।

स्रोत : नाबार्ड

प्राथमिक सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (पीसीएआरडीबी)

तुलन पत्र परिचालन

2.55 2012-13 में प्राथमिक सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक(पीसीएआरडीबी) की आस्ति वृद्धि में 1.7 प्रतिशत तक और अधिक गिरावट आई, जबकि पिछले वर्ष यह वृद्धि 5.5 प्रतिशत थी। इन संस्थाओं ने भी वर्ष के दौरान स्वाधिकृत निधियों (पूंजी एवं आरक्षित निधियों सहित) में कमजोर वृद्धि के साथ-साथ बकाया ऋण में ऋणात्मक वृद्धि दर्शाई।

लाभप्रदता

2.56 2012-13 के दौरान हानि उठाने वाले पीसीएआरडीबी की संख्या में थोड़ा इज़ाफा हुआ और यह बढ़कर 318 हो गयी (चार्ट 2.33)। समेकित आधार पर 2012-13 में पीसीएआरडीबी में हानियां दर्शायीं।

चार्ट 2.33 : पीसीएआरडीबी का लाभदायक सूचकांक

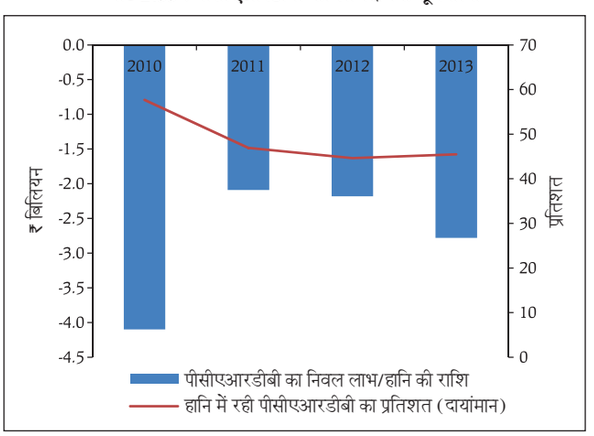

स्रोत : नाबार्ड

आस्ति की गुणवत्ता

2.57 प्राथमिक सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (पीसीएआरडीबी) की आस्ति गुणवत्ता लगातर नाजुक रही। उनका जीएनपीए अनुपात 2012-13 में बढ़कर 37 प्रतिशत हो गया था। (सारणी 2.10)।

गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां

2.58 मार्च 2014 की स्थिति के अनुसार 12,029 एनबीएफसी ने रिज़र्व बैंक से पंजीकरण लिया, जिनमें से 243 जमाराशि स्वीकार (एनबीएफसी-डी) करती हैं और 11,788 जमाराशि स्वीकार (एनबीएफसी-एनडी) नहीं करती हैं। 1 बिलियन रुपए एवं इससे अधिक आस्ति वाली एनबीएफसी-एनडी को 01 अप्रैल, 2007 से प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमाराशि स्वीकार नहीं करने वाली एनबीएफसीज़ (एनबीएफसीज़-एनडी-एसआई)[25] के रूप में वर्गीकृत किया गया है और विवेकसम्मत विनियम जैसे पूंजी पर्याप्तता संबंधी आवश्यकताएं तथा एक्सपोज़र संबंधी मानदंडों के साथ-साथ रिपोर्टिंग संबंधी आवश्यकताएं उन पर लागू की गई हैं। वित्तीय स्थिरता के दृष्टिकोण से एनबीएफसीज़ का यह हिस्सा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वे शेष वित्तीय प्रणाली से जुड़ी हुई हैं (अध्याय III के पैरा 3.21-3.23 में इसकी और अधिक चर्चा की गई है)।

एनबीएफसी-एनडी-एसआई का वित्तीय कार्यनिष्पादन

2.59 एनबीएफसी-एनडी-एसआई के संपूर्ण तुलन पत्र में 2013-14 के दौरान 9.5 प्रतिशत का विस्तार हुआ (सारणी 2.11)। ऋण एवं अग्रिम (आस्ति पक्ष का प्रमुख हिस्सा) में 11.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कुल उधार में 9.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो उनकी देयताओं का दो-तिहाई है।

2.60 2013-14 के दौरान एनबीएफसी-एनडी-एसआई का वित्तीय कार्यनिष्पादन बेहतर हुआ, क्योंकि कुल आय की तुलना में उनका शुद्ध लाभ 18.3 प्रतिशत से बढ़कर 20.2 प्रतिशत हो गया। इसके परिणामस्वरूप, मार्च 2014 की स्थिति के अनुसार आस्तियों पर प्रतिलाभ गत वर्ष के 2 प्रतिशत से बढ़कर 2.3 प्रतिशत हो गया (सारणी 2.12)।

सारणी 2.11 : एनबीएफसी-एनडी-एसआई के तुलनपत्र का समेकन

(मार्च के अंत में)

(रु. बिलियन में)

मद	2013	2014अ	प्रतिशत में भिन्नता
1. शेयर पूँजी	647	695	7.4
2. रिज़र्व और अधिशेष	2,276	2,457	8.0
3. कुल उधारियाँ	8,104	8,902	9.8
4. चालू देयताएं और प्रावधान	574	647	12.8
कुल देयताएँ / अस्तियां	**11,601**	**12,701**	**9.5**
1. ऋण और अग्रिम	7,600	8,455	11.2
2. किराया खरीद आस्तियां	805	896	11.3
3. निवेश	1,945	2,075	6.6
4. अन्य आस्तियां	1,250	1,276	2.1
ज्ञापन मदें			
1. पूंजी बाज़ार एक्सपोज़र (सीएमई)	885	1,029	16.4
2. कुल आस्तियों का सीएमई (प्रतिशत)	7.6	8.1	
3. लीवरेज अनुपात	3.0	3.0	

अ.: अनंतिम

टिप्पणियाँ : 1. यहाँ 420 संस्थाओं का डाटा प्रस्तुत किया है, जो एनबीएफसी-एनडी-एसआई क्षेत्र में कुल आस्तियों का 95 प्रतिशत से अधिक है।

2. प्रतिशत के आंकड़ें पूर्णांकित किये गये हैं।

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां

सारणी 2.12 : एनबीएफसी - एनडी-एसआई क्षेत्र के वित्तीय कार्यनिष्पादन

(मार्च के अंत में)

(रु. बिलियन में)

मद	2013	2014 अ
1. कुल आय	1,272	1,436
2. कुल व्यय	1,039	1,147
3. निवल लाभ	233	290
4.कुल आस्तियां	11,601	12,701
वित्तीय अनुपात (प्रतिशत)		
(i) कुल आय का निवल लाभ	18.3	20.2
(ii) कुल आस्तियों का निवल लाभ	2.0	2.3

अ : अनंतिम

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां

[25] मार्च, 2014 को 465 एनबीएफसीज़-एनडी-एसआई थे।

आस्ति गुणवत्ता

2.61 एनबीएफसीज़-एनडी-एसआई क्षेत्र की आस्ति गुणवत्ता मार्च 2013 की तिमाही के अंत से क्षीण हो रही है (चार्ट 2.34)। रिज़र्व बैंक ने बैंकों एवं एनबीएफसी दोनों को एनपीए से होने वाले दबाव को दूर करने के उद्देश्य से अलग-अलग दिशानिर्देश जारी किया है। एनबीएफसी को सूचित किया गया कि वे अपने खातों में प्रारंभिक दबाव को पहचानें और उप-आस्ति श्रेणी बनाएं यथा, स्पेशल मेंशन खाता (एसएमए), जिसे अतिदेय मूलराशि या ब्याज भुगतान को ध्यान में रखने के साथ-साथ उनके खातों की दुर्बलता के आधार पर और तीन उप-श्रेणियों (यथा, एसएमए-0, एसएमए-1 एवं एसएमए-2) में विभाजित किया गया है। उन्हें यह भी निदेश दिया गया कि वे संगत ऋण संबंधी जानकारी सेन्ट्रल रिपोजिटरी ऑफ इन्फॉरमेशन ऑन लार्ज क्रेडिट्स (सीआरआईएलसी) को दें।

पूंजी पर्याप्तता

2.62 दिशानिर्देशों के अनुसार, एनबीएफसी-एनडी-एसआई को चाहिए कि वे निम्नतम पूंजी बनाए रखें जिसमें टियर I[26] एवं टियर II पूंजी शामिल हो और यह उनकी कुल जोखिम-भारित आस्तियों के 15 प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए। मार्च 2014 की स्थिति के अनुसार, सामान्यतः, एनबीएफसी-एनडी-एसआई की पूंजी पर्याप्तता स्थिति सुखद रही और विवेकपूर्ण मानदंडों से बहुत ऊपर थी। फिर भी, एनबीएफसी-एनडी-एसआई का सीआरएआर सितंबर 2013 के 29.0 प्रतिशत की ऊंचाई से गिरकर मार्च 2014 में 27.2 प्रतिशत रह गया। यह बाद में सितंबर 2014 की तिमाही के अंत तक 27.8 प्रतिशत हो गया (चार्ट 2.35)।

लाभप्रदता

2.63 पिछली तीन तिमाहियों में लगभग 2.3 प्रतिशत के स्तर पर बने रहने के बाद एनबीएफसी-एनडी-एसआई का आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) सितंबर 2014 में बढ़कर 2.5 प्रतिशत हो गया (चार्ट 2.36)।

चार्ट 2.34 : एनबीएफसी - एनडी - एसआई की आस्ति गुणवत्ता

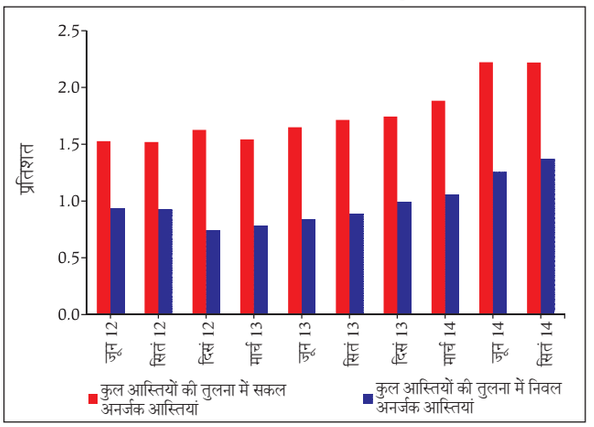

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां

चार्ट 2.35: एनबीएफसी - एनडी - एसआई का जोखिम भारित आस्तियों के अनुपात की पूंजी

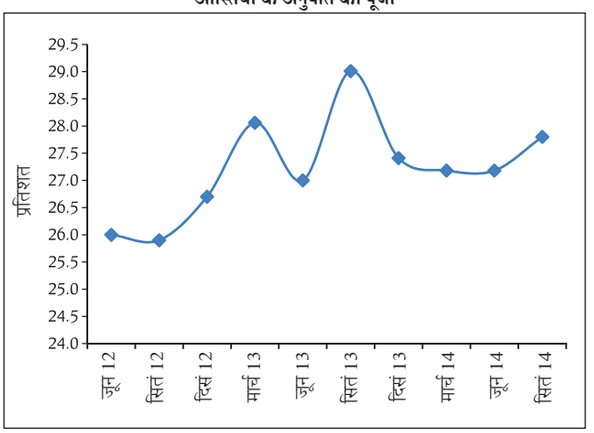

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां

चार्ट 2.36 : एनबीएफसी - एनडी - एसआई की आस्तियों पर प्रतिफल में प्रवृत्ति

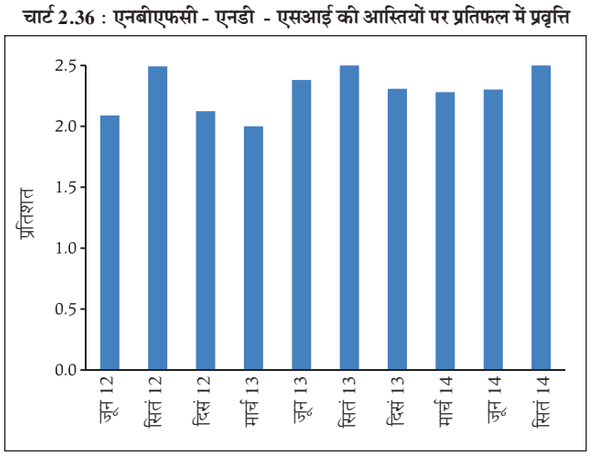

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां

[26] 10 नवंबर 2014 को जारी संशोधित दिशानिर्देशों के अनुसार एनबीएफसीज़-एनडी-एसआई (रु. 5 बिलियन का आस्ति आकार - नई परिभाषा) के लिए निम्नतम टियर I पूंजी में संशोधन कर उसे 10 प्रतिशत (पूर्व में टियर I पूंजी 7.5 प्रतिशत से कम नहीं हो सकता है) कर दिया गया है और इन कंपनियों द्वारा चरणबद्ध रूप में अनुपालन किया जाना है: मार्च 2016 के अंत तक 8.5 प्रतिशत; और मार्च 2017 के अंत तक 10 प्रतिशत)।

दबाव परीक्षण - ऋण जोखिम

प्रणालीगत स्तर

2.64 सितंबर 2014 की समाप्त अवधि के लिए पूरे एनबीएफसी क्षेत्र [27] का ऋण जोखिम संबंधी दबाव परीक्षण तीन परिदृश्यों में किया गया है: (i) सकल एनपीए में 0.5 (एसडी) की वृद्धि हुई (ii) सकल एनपीए में 1 एसडी की वृद्धि हुई और (iii) सकल एनपीए बढ़कर 3 एसडी हो गई। परिणाम बताते हैं कि प्रथम दो परिदृश्यों के अंतर्गत एनबीएफसी क्षेत्र का सीआरएआर समान रहा जबकि तृतीय परिदृश्य में यह 23.6 प्रतिशत के स्तर से घटकर 23.0 प्रतिशत रह गया।

व्यक्तिगत एनबीएफसी

2.65 व्यक्तिगत एनबीएफसी का भी इसी अवधि के लिए और इन्हीं तीन परिदृश्यों के अंतर्गत ऋण जोखिम संबंधी दबाव परीक्षण किया गया। परिणाम बताते हैं कि परिदृश्य (i) और (ii) के अंतर्गत लगभग 1.6 प्रतिशत कंपनियां 15 प्रतिशत की निम्नतम विनियामक पूंजी संबंधी आवश्यकताओं का अनुपालन नहीं कर पाएंगी जबकि तृतीय परिदृश्य के अंतर्गत 4.1 प्रतिशत कंपनियां निम्नतम विनियामक सीआरएआर मानदंड का अनुपालन नहीं कर पाएंगी।

अंतरसंबद्धता

अंतरबैंक बाजार की प्रवृति

2.66 चलनिधि के साथ-साथ दीर्घावधि उपयोगकर्ताओं के लिए बैंकों की अंतरबैंक बाजार पर निर्भरता कतिपय उल्लेखनीय प्रवृत्ति दिखाती है। मात्रा की दृष्टि से बाजार का आकार पिछली दस तिमाहियों में लगभग 6 से 8 ट्रिलियन रुपए के दायरे में रहने के कारण कुल बैंकिंग क्षेत्र आस्तियों के प्रतिशत के रूप में बाजार में तेजी से गिरावट देखी गई (चार्ट 2.37)।

2.67 सितंबर 2014 की स्थिति के अनुसार सरकारी क्षेत्र के बैंकों की बाजार में 70 प्रतिशत हिस्सेदारी थी और वे बाज़ार में सबसे बड़े खिलाड़ी थे । फिर भी, अंतरबैंक बाजार में विदेशी बैंकों का हिस्सा मार्च 2012 से लगातार घटा है (चार्ट 2.38)।

चार्ट 2.37 : अंतर बैंक बाज़ार का आकार

(कुल बैंकिंग क्षेत्र की आस्तियों की प्रतिशत के रूप में)

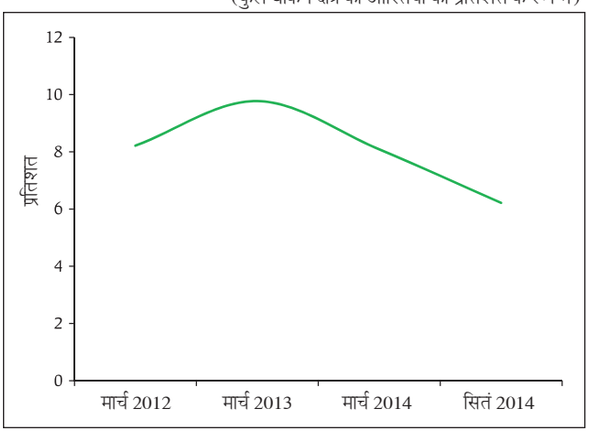

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

चार्ट 2.38 : अंतर बैंक बाज़ार में विभिन्न बैंक समूहों का हिस्सा

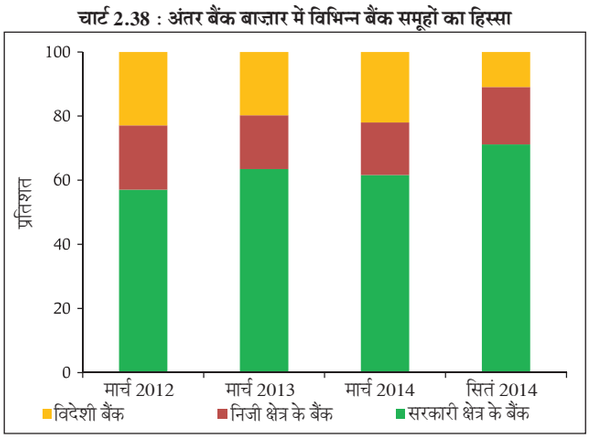

टिप्पणी : अंतरबैंक बाजार की संरचना उधार देने के साथ ही साथ उधार लेने -दोनों पर आधारित है।

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

[27] इसमें एनबीएफसी-डी और एनबीएफसी-एनडी-एसआइ शामिल हैं।

चार्ट 2.39 :अंतर बैंक उधारी

(कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में)

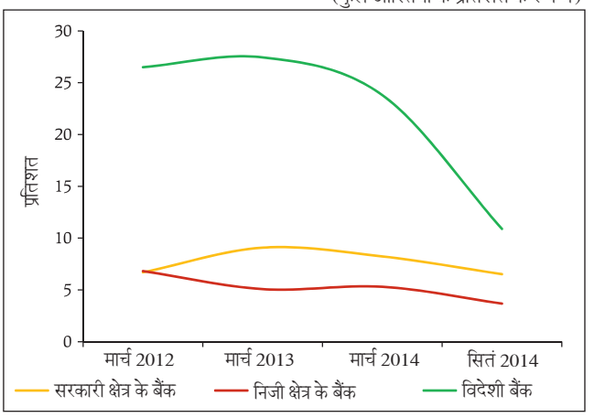

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

चार्ट 2.40 : अंतर बैंक उधार

(कुल बैंकिंग आस्तियों के प्रतिशत के रूप में)

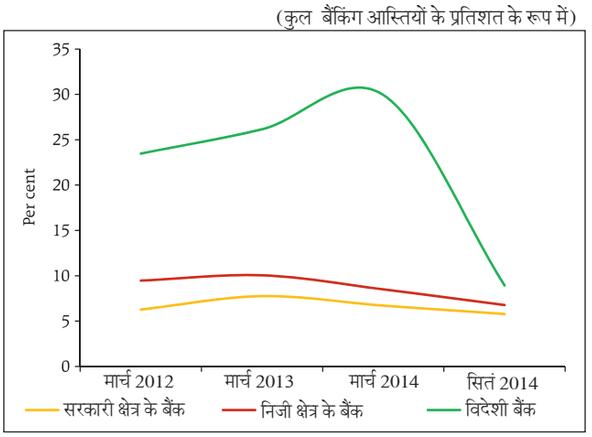

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

2.68 प्रत्येक बैंक समूह का उनकी संबंधित कुल आस्तियों की तुलना में अंतरबैंक बाजार में उधार देने और उधार लेने का अनुपात[28] विशेष समूह द्वारा प्रयोग में लाए गए बिजनेस मॉडल का महत्वपूर्ण संकेतक है। विदेशी बैंकों, जिसका तत्संबंधी अनुपात सबसे अधिक था, में अभी हाल में तेजी से गिरावट देखी गई (चार्ट 2.39 एवं 2.40)।

2.69 सितंबर 2014 की स्थिति के अनुसार अंतरबैंक बाजार मुख्यतः निधि आधारित (एक्सपोजर का लगभग 80 प्रतिशत) रहा (चार्ट 2.41)। समूचे बैंकिंग क्षेत्र ने अपनी कुल बाह्य देयताओं का लगभग 6 प्रतिशत बाजार से जुटाया है (चार्ट 2.42)।

2.70 अंतर बैंक बाजार में निधि आधारित एक्सपोजर का काफी हिस्सा अल्पावधि स्वरूप का है। बैंक द्वारा जारी जमा प्रमाणपत्र (सीडीज) का इस क्षेत्र में बड़ा योगदान है। अल्पावधि अंतरबैंक बाजार का कुल निधि आधारित अंतरबैंक बाजार के प्रतिशत के रूप

चार्ट 2.41 : अंतर बैंक बाज़ारों में निधि आधारित एवं गैर-निधि आधारित एक्सपोजर

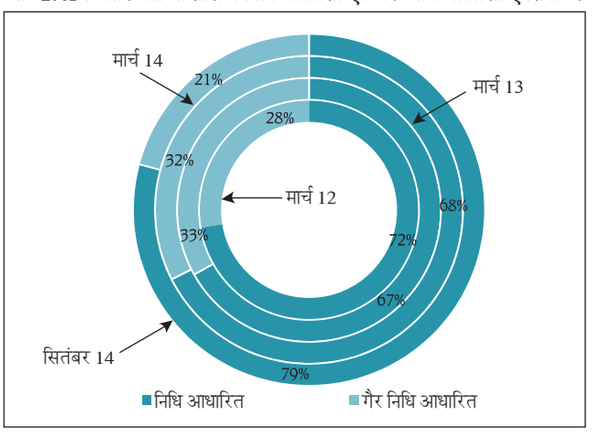

चार्ट 2.42 : निधि आधारित अंतर बैंक उधार

(कुल बाहरी देयताओं के प्रतिशत के रूप में)

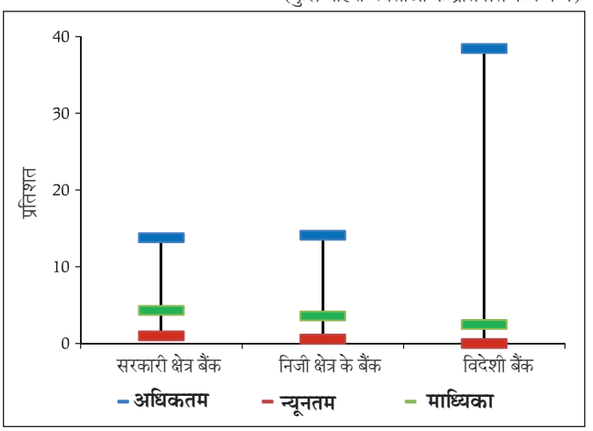

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

[28] उधार लेने और उधार देने का तात्पर्य देय एवं प्राप्य से है जो अंतरबैंक बाजार में निधि आधारित और गैर-निधि आधारित अंतरण दोनों से संबंधित है। गैर-निधि आधारित एक्सपोजर में डेरिवेटिव की स्थिति भी शामिल है जो बैंकों ने एक-दूसरे के संबंध में लिया है। डेरिवेटिव्स के लिए सकारात्मक एमटीएम एवं ऋणात्मक एमटीएम आंकड़ों (सकल आधार पर) को क्रमशः प्राप्य एवं देय के रूप में माना गया है।

में आकार सितंबर 2014 की स्थिति के अनुसार 41 प्रतिशत रहा (चार्ट 2.43)।

चार्ट 2.43: अल्पावधि अंतर बैंक बाज़ार

(कुल निधि आधारित अंतर बैंक बाजार का प्रतिशत)

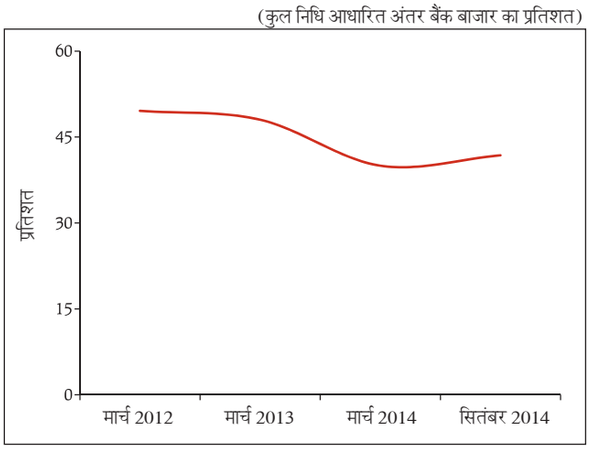

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

बैंकिंग प्रणाली की नेटवर्क संरचना

2.71 बैंकिंग प्रणाली, संबद्धता अनुपात[29] से अभी भी पर्याप्त रूप से जुड़ा हुआ है, जो अंतरसंबद्धता का एक सीधा अनुमान है और यह पिछले तीन वर्षों में लगातार 20 प्रतिशत से अधिक रहा है। बैंकिंग प्रणाली की नेटवर्क संरचना[30] जिसे टियर[31] का रूप दिया गया है, दर्शाती है कि पिछले दो वर्षों में संबद्धता की दृष्टि से अत्यंत संबद्ध बैंक समान ही रहे हैं। साथ ही, प्रणालीगत रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण[32] बैंक समान रहे हैं। अंतरबैंक बाजार में सरकारी क्षेत्र के बैंक निवल ऋणदाताओं की दृष्टि से सबसे आगे हैं जबकि निवल उधारकर्ताओं की दृष्टि से निजी क्षेत्र के बैंक सबसे आगे हैं (चार्ट 2.44)।

चार्ट 2.44 : भारतीय बैंकिंग प्रणाली का नेटवर्क संरचना[33] - (सितंबर 2014)

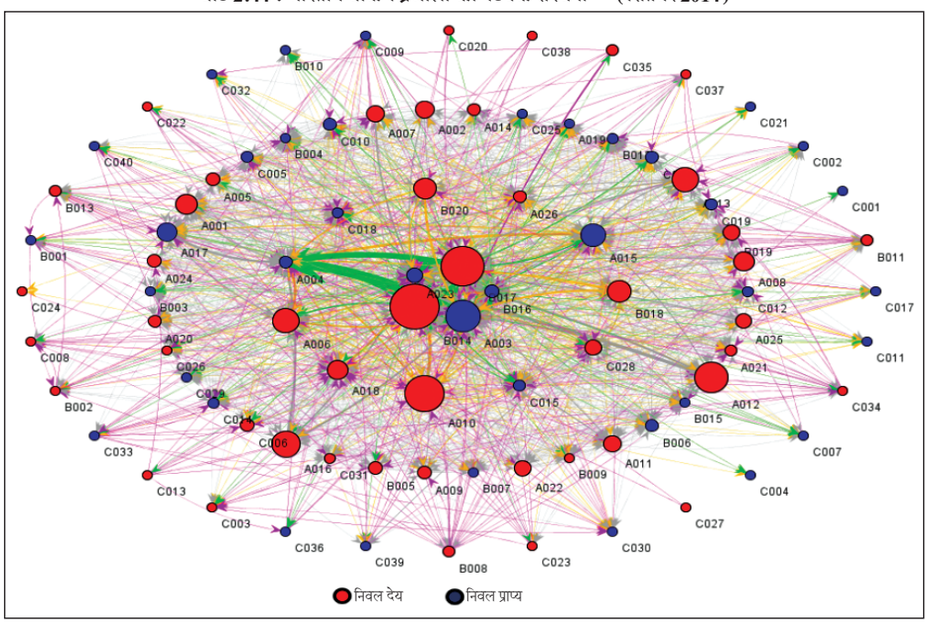

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टॉफ का आकलन।

[29] संबद्धता अनुपात सभी संभावित कड़ियों की तुलना में नेटवर्क में वास्तविक कड़ी का माप है।

[30] विश्लेषण में प्रयोग किए गए नेटवर्क मॉडल का विकास प्रोफेसर शेरी मारकोस (यूनिवर्सिटी ऑफ ईस्सेक) एवं डॉ. साइमन जीयेनसंत (बाथ यूनिवर्सिटी) द्वारा वित्तीय स्थिरता इकाई, भारतीय रिज़र्व बैंक के सहयोग से किया गया है।

[31] टियर संरचना में भिन्न-भिन्न संस्थाओं का नेटवर्क में अन्य के साथ भिन्न-भिन्न स्तर की संबद्धता है। वर्तमान विश्लेषण में, सबसे अंदरूनी कोर (चार्ट 2.44 में नेटवर्क रेखा-चित्र के बीचोंबीच) अत्यधिक संबद्ध है। बैंकों को मध्य कोर, बाह्य कोर एवं बाह्य सतह (संबंधित कॉनसेंट्रिक सर्किल रेखा-चित्र के लगभग बीच में है) में उनकी संगत संबद्धता के स्तर के आधार पर रखा गया है।

[32] अधिकतम ईजेलवैल्यू माप, जो मापदंड के रूप में संबद्धता एवं निवल उधार स्थिति दोनों का उपयोग करता है, प्रणालीगत दृष्टि से महत्वपूर्ण बैंक का निर्णय करता है।

[33] लाल और नीले घेरे क्रमशः निवल उधारकर्ता एवं निवल उधारदाता की ओर संकेत करती हैं। गेंदों के आकार का भार संबंधित बैंकों की निवल स्थितियों के आधार पर किया जाता है। बैंकों के बीच के संबंध को दर्शाने के लिए तीर का उपयोग किया गया है जो बकाया अंतरण की दिशा दर्शाती है। अंदर की ओर आता तीर (इन-डिग्री) निवल प्राप्य हैं जबकि बाहर की ओर जाता तीर (आउट-डिग्री) निवल देय हैं। तीर की मोटाई का भार एक्सपोज़र के आकार के आधार पर किया जाता है।

वित्तीय प्रणाली में अंतरसंबद्धता

2.72 भारतीय वित्तीय प्रणाली की नेटवर्क संरचना के प्रति बेहतर दृष्टिकोण तभी पनपेगा जब अंतरबैंक बाजार के विश्लेषण में अन्य दो अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्रों नामत:, आस्ति प्रबंध कंपनियों (एएमसी) जो म्युचुअल फंड का प्रबंध करती हैं और बीमा कंपनियों[34] को शामिल किया जाएगा। इस व्यापक बाजार का आकार सितंबर 2014 की स्थिति के अनुसार 12 ट्रिलियन रुपए से अधिक रहा जो अंतरबैंक बाजार के आकार से करीब-करीब दुगुना है। इस प्रणाली में म्युचुअल फंड एवं बीमा कंपनी दोनों निधि के सर्वाधिक प्रदाता हैं जबकि निधि पाने वालों में पीएसबीज़ सबसे आगे हैं। बैंकिंग क्षेत्र द्वारा म्युचुअल फंड एवं बीमा कंपनियों से उगाही गई कुल निधि 5.5 ट्रिलयन रुपए (चार्ट 2.45) है।

2.73 एक भिन्न दृष्टिकोण से देखे जाने पर पाया गया कि एएमसीज़ एवं बीमा कंपनियों द्वारा अपनी संबंधित प्रबंधनाधीन आस्तियों (एयूएम) के प्रतिशत के रूप में बैंकिंग क्षेत्र में भारी निवेश[35] किए गए थे। वित्तीय प्रणाली में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के बीच की अंतरसंबद्धता के कारण दबाव काल की स्थिति में प्रणाली को संक्रामक जोखिम का ख़तरा रहता है। इसके बावजूद वित्तीय संस्थाओं के बीच अंतरसंबद्धता की अपनी विशेषता है (बॉक्स 2.1)।

चार्ट 2.45 : आस्ति प्रबंधन कंपनियां (एएमसीएस) तथा बीमा कंपनियों से बैंकिंग क्षेत्र द्वारा एकत्रित निधियां

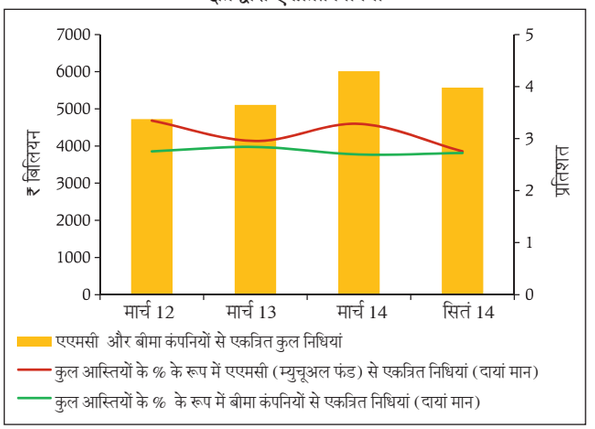

टिप्पणियां: कुल आस्तियां केवल तुलन-पत्र की मदों पर आधारित है।

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां।

बॉक्स 2.1: वित्तीय प्रणाली में अंतरसंबद्धता - कितना महत्वपूर्ण और कितना जोखिम

वित्तीय प्रणाली के अनेक विशेषताओं का संकट पश्चात् का अनुभव, जिन पर पहले अत्यधिक ध्यान नहीं दिया गया था, कई नए विनियामक मानदंडों पर फिर से विचार करने का कारण बना। अत्यधिक ध्यान देने की बात यह है कि व्यक्तिगत संस्थाओं पर नज़र रखने के अतिरिक्त वित्तीय प्रणाली के व्यष्टिगत दृष्टिकोण के महत्व को स्वीकार किया गया। अनेक संरचनाओं में से उभर कर सामने आनेवालों में है - टू कनेकटेड टू फेल (टीसीटीएफ)। अमरीका का अनुभव कि उनकी एक संस्था के पतन की वजह से दर्जनों संस्थाएं डूब गईं क्योंकि सबका निवेश समान था, इस वजह से पूरा विश्व वित्तीय संस्थाओं के बीच मौजूद *अंतरसंबद्धता* के तथ्य पर सक्रियता से विचार करने लगा। तत्पश्चात् अंतरसंबद्धता को मानक निर्माण निकायों द्वारा प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं की पहचान करने के लिए एक मापदंड के रूप में स्वीकार किया गया।

फिर क्यों पूरे विश्व में नेटवर्क मॉडल का उपयोग वित्तीय संस्थाओं में अंतरसंबद्धता का आकलन करने के लिए लगातार बढ़ रहा है? उत्तर इस तथ्य में निहित है कि वित्तीय नेटवर्क जटिल एवं अनुकूलनीय प्रणाली है। ये इसलिए जटिल है क्योंकि वित्तीय संस्थाओं में शामिल अंतरसंबद्धता व्यापक एवं अनुकूलनीय है क्योंकि प्रणाली में व्यक्तिगत संस्थाएं हमेशा सर्वोत्कृष्ट स्थिति में रहना पंसद करती हैं, तथापि उन्हें पूरी जानकारी नहीं दी गई है। इस प्रकार की जटिल अनुकूलनीय प्रणाली संकटकालीन स्थिति में हानि को कई गुना बढ़ा सकती है। बिलकुल ऐसा ही लेहमनब्रदर्स के पतन के दौरान हुआ जब कई संस्थाओं ने अपने दरवाजे बंद कर दिए थे और संस्थाओं को नकदी प्रदान करने से मना कर दिया था, केवल इसलिए कि उन्हें संक्रमण से पीड़ित होने का भय था।

पहली बात है कि, नेटवर्क मॉडल अमुक प्रणाली में संबंधों की संरचना एवं पद्धति को समझने में मदद करता है। यदि उच्च केन्द्रीयता अंकों वाली संस्थाएं प्रणाली में भारी निवल उधारकर्ता भी हैं तब किसी ऐसी संस्था की विपत्ति की स्थिति में संभावित स्थिरता संबंधी मुद्दे खड़े हो सकते हैं। इस प्रकार के संकेत विनियामक को प्रणाली में उपलब्ध पुराने स्रोतों के पुनर्मूल्यांकन और प्रतिसक्रिय उपाय करने में मूल्यवान सहयोग प्रदान कर सकता है।

[34] विश्लेषण के लिए 21 बीमा कंपनियों एवं म्युचुअल फंड के प्रबंधन के लिए 19 आस्ति प्रबंध कंपनियों (एएमसीज़) को सैम्पल में शामिल किया गया है।

[35] वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, जून 2014

संक्रामकता का विश्लेषण

2.74 संक्रामकता का विश्लेषण[36] बैंकिंग प्रणाली को किसी एक या कई बैंकों से होने वाली संभावित हानि का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है। यद्यपि इस प्रकार के विश्लेषण काल्पनिक प्रतीत होते हैं लेकिन बैंकों की विषाक्तता के सही संकेतक हैं। इसका परिणाम प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों की पहचान करने में अतिरिक्त सहयोग प्रदान करता है। आमतौर पर तीन प्रकार से संक्रामकता का विश्लेषण किया जाता है नामतः शोधक्षमता संक्रामकता, चलनिधि संक्रामकता एवं संयुक्त चलनिधि-शोधक्षमता संक्रामकता। शोधक्षमता संक्रामकता वित्तीय प्रणाली में निवल उधारकर्ता वाले बैंक के डूबने से आने वाले संकट का सूचक है दूसरी तरफ, चलनिधि संक्रामकता निवल उधारदाता बैंक से पनपती है। वास्तविक लोक में शोधक्षमता एवं चलनिधि संक्रामकता दोनों वित्तीय प्रणाली में प्रत्यक्ष रूप से मौजूद सक्रिय तत्वों के कारण साथ-साथ उभरती हैं।

2.75 ट्रिगर बैंक के रूप में एक-दूसरे से जुड़े शीर्ष के पांच बैंकों का विश्लेषण बताता है कि यदि कोई बैंक संक्रामकता का शिकार बनता है तो संयुक्त शोधक्षमता-चलनिधि स्थिति में बैंकिंग प्रणाली को अपनी कुल टियर I पूंजी का लगभग 50 प्रतिशत की हानि उठानी पड़ सकती है (सारणी 2.13)। इस बात पर ध्यान दिया जाए कि बैंक ई जो एकल आधार पर भारी शोधक्षमता या चलनिधि संक्रामकता पैदा नहीं करता, संयुक्त परिदृश्य में बड़ा असर डाल सकता है। क्योंकि बैंक ई किसी अमुक बैंक के लिए संकट पैदा करता है और इस प्रकार उस बैंक के माध्यम से संक्रामकता फैलता है। यह न केवल अंतरसंबद्धता बल्कि निगरानी की महत्ता को रेखांकित करता है और साथ ही इस कड़ी में शामिल प्रतिपक्षियों एवं एक्सपोज़र की मात्रा को भी।

सारणी 2.13: अंतरसंबद्ध शीर्ष -5 बैंकों द्वारा प्रणाली में उत्पन्न होने वाला संक्रामकता

उत्पन्न करने वाले (ट्रिगर) बैंक	बैंकिंग प्रणाली की कुल टिअर-I पूंजी की प्रतिशत हानि		
	ऋण-शोधन क्षमता संक्रमण	चलनिधि संक्रमण	संयुक्त ऋण-शोधन क्षमता - चलनिधि संक्रमण
बैंक ए	3.4	13.7	37.1
बैंक बी	0.7	11.2	49.5
बैंक सी	5.5	0.9	42.5
बैंक डी	0.5	2.1	2.7
बैंक ई	4.4	3.3	47.5

स्रोत : भा.रि.बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां तथा स्टॉफ का आकलन।।

[36] कार्य-प्रणालियों एवं परिकल्पनाओं के विवरण अनुबंध 2 में दिए गए हैं।